SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:54, Issue: 11
APRIL-2024, Price Rs.20/-
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

अप्रैल-2024
रु.20/-

उगादि आस्थान, तिरुमल
दि. 09-04-2024

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

ओंटिमिट्टा

श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2024 अप्रैल 17 से 25 तक

17-04-2024 बुधवार
दिन - ध्वजारोहण...रात - शेषवाहन

18-04-2024 गुरुवार
दिन - वेणुगानालंकार...रात - हंसवाहन

19-04-2024 शुक्रवार
दिन - वटपत्रशायि अलंकार...रात - सिंहवाहन

20-04-2024 शनिवार
दिन - नवनीतकृष्णालंकार...रात - हनुमत्सेवा

21-04-2024 रविवार
दिन - मोहिनिसेवा...रात - गरुडसेवा

22-04-2024 सोमवार
दिन - शिवधनुर्भाणालंकार
रात - एदुर्कोलु, कल्याणोत्सव, गजवाहन

23-04-2024 मंगलवार
दिन - रथ-यात्रा

24-04-2024 बुधवार
दिन - कालीयमर्दनालंकार...रात - अश्ववाहन

25-04-2024 गुरुवार
दिन - चक्रस्नान...रात - ध्वजावरोहण

तिरुपति

श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2024 अप्रैल 05 से 13 तक

05-04-2024 शुक्रवार
दिन - ध्वजारोहण...रात - महाशेषवाहन

06-04-2024 शनिवार
दिन - लघुशेषवाहन...रात - हंसवाहन

07-04-2024 रविवार
दिन - सिंहवाहन...रात - मोतीवितानवाहन

08-04-2024 सोमवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन...रात - सर्वभूपालवाहन

09-04-2024 मंगलवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव...रात - गरुडवाहन

10-04-2024 बुधवार
दिन - हनुमद्वाहन...रात - गजवाहन

11-04-2024 गुरुवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन...रात - चंद्रप्रभावाहन

12-04-2024 शुक्रवार
दिन - रथ यात्रा...रात - अश्ववाहन

13-04-2024 शनिवार
दिन - चक्रस्नान...रात - ध्वजावरोहण

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-१३)

जैसे जीवात्मा की इस देह में बालकपन, जवानी और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति होती है; उस विषयमें धीर पुरुष मोहित नहीं होता।

अय्यो पोयेम्ब्रायमु गालमु
मुय्यंचु मनसुन ने मोहमति नैति ॥अय्यो॥

चुट्टंबुला तनकु सुतुलु गांतलु चेलुलु
वट्टि यासल बेट्टुवारेगाक
नेट्टुकोनि वीरु कडु निजमनुचु हरिनात्म
बेट्टनेरक वृथा पिरिवीकुलैति ॥अय्यो॥

तगुबंधुला तनकु दल्लुलुनु दंड्रुलुनु
वगल बेट्टुचु तिरुगुवारे गाक
मिगुल वीरल पोंदु मेलनुचु हरि नात्म
दगिलिंचलेक चिंतापरुडनैति ॥अय्यो॥

अंतहितुला तनकु अन्नलुनु तम्मुलुनु
वंतु वासिकि पेनगुवारे गाक
अंतरात्मुडु श्रीवेंकटाद्रीशुगोलुवकिटु
संत कूटमुल अलजडिकि लोनैति ॥अय्यो॥

हरि का ध्यान छोडकर जीवन के मोह-पाशों में ही, अन्तिम समय तक व्यतीत करने के कारण यौवन और आयु - सब कुछ अब छूट गये हैं। मोह-पाश में फँसकर मैं मूर्ख मानव, सब कुछ खो दिया। पत्नी, पुत्र, सखी ये सारे बंधु नहीं हैं। बंधन हैं। इन सबको सच्चे साथी मानकर 'हरि' को मैं ने नहीं माना। माता-पिता अन्य बंधुगण ये सब फीके हैं। सगे भाई-बहन भी हों, लेकिन वे सब धन-दौलत के साझेदार ही हैं। मन-मंदिर में अंतरात्मा के रूप में बसे हुए स्वामी श्री वेंकटेश को न पहचानकर झंझट में मैं फँस गया हूँ।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

ऒंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा

भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

सूचना

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।

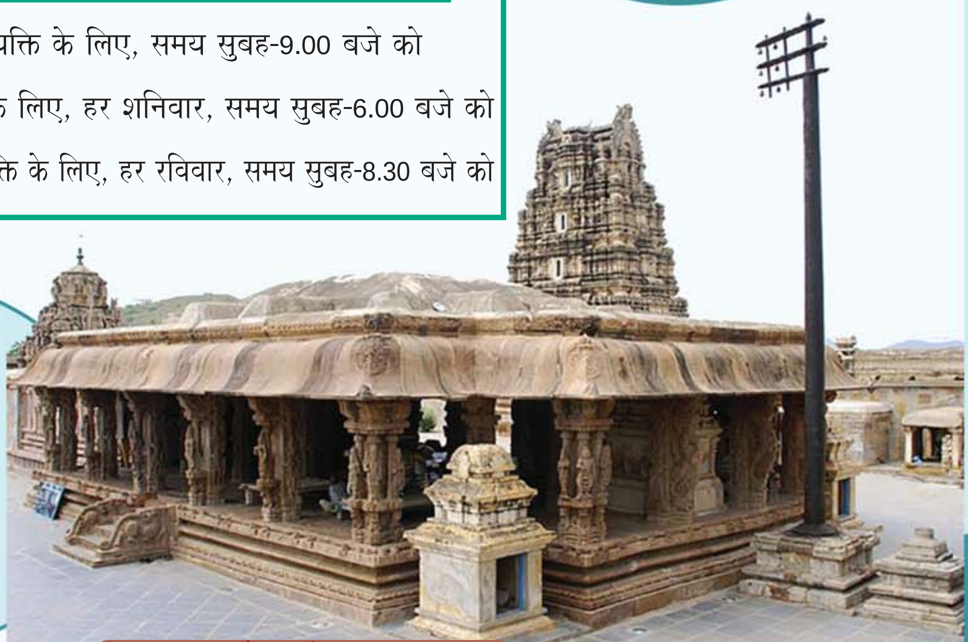

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-54 अप्रैल-2024 अंक-11

विषयसूची

कौसल्या सुप्रजा रामा!	डॉ.एन.दिव्या	07
ताल्लपाका अन्नमय्या को श्री वेंकटेश्वर का दर्शन	डॉ.के.सुधाकर राव	10
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	14
उगादि	डॉ.बी.के.माधवी	16
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	19
मत्स्य जयंती	डॉ.गाजुला.शेकषावली	21
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	24
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	31
अंकों से विभाजित करने के नियम	डॉ.वड्डी जगदीश	34
अश्वत्थामा	डॉ.जी.सुजाता	37
सीय राममय सब जग जानी	डॉ.विजयप्रकाश त्रिपाठी	40
आम फलों का राजा	डॉ.सुमा जोषि	44
आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!!	श्री अवधेष कुमार शर्मा	46
अप्रैल महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - समर्पण के फल	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - सभी को मोक्ष	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 21		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री कोदंडरामस्वामी, तिरुमल।

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

सकल गुणाभिराम की जय हो!!

भारतीय सनातन सांप्रदाय और वैदिक वाङ्मय में 'वाल्मीकि रामायण' और 'प्रभु श्रीराम' का सर्वोत्कृष्ट स्थान है। साक्षात् श्री महाविष्णु के अंश से मानव के रूप में अवतरित हुये धर्म के प्रतिरूप प्रभु श्रीराम। मानव अभ्युन्नति व विकास के लिए रामायण नामक पवित्र ग्रंथ एक मूल कारक बनता है। सूर्य वंश में जन्मित एक महान पुरुष श्रीरामचंद्र। वे हमेशा पिताजी के आज्ञा का पालन करते थे और वे एक पत्नीव्रत है, सत्यवाक् पालक, सकलगुण संपन्न, धर्म रक्षक, वीर पराक्रम योद्धा, मृद कोमल स्वभावी थे।

मोल्ल रामायण, कंभ रामायण, वाल्मीकि रामायण, गोपीनाथ रामायण, योग वासिष्ठ रामायण, तत्व संग्रह रामायण, पद्यचित्र रामायण, रामचरित मानस... इन सभी ग्रंथों में प्रभु राम का गुणगान, वैभव की जानकारी प्राप्त होती है। विभिन्न रामकथा आधारित ग्रंथ होने पर भी वाल्मीकि रामायण ही प्रामाणिक रूप से स्वीकार किया गया है। बालकांडा, अयोध्या कांडा, अरण्य कांडा, किष्किंद कांडा, सुंदरकांडा, युद्ध कांडा, उत्तर कांडा में 24 हजार श्लोकों में सात भागों में रामकथा के बारे में विवरण मिलती है।

आजकल मनुष्य प्रभु श्रीराम से धर्मनिरता, पित्रु वाक् पालन, बढों का आदर करना, गुरु आज्ञा का पालन करना को सीखना है। ये सब हमारे सांप्रदायों में एक व्यक्ति के व्यक्तित्व की अभिवृद्धि के लिए प्रेरित करता है और इसी तरीखे से रिश्ते भी बढ़ते हैं। व्यक्ति का सौशील्य भी प्रकट होता है। एक अच्छे समाज निर्माण के लिए भी कारक होता है।

आज के युवा को भी गुरु आज्ञा का पालन करते हुए, उनके आदर करने को सीखना चाहिए। बुराई से सदैव दूर रहना चाहिए। बुराई कितनी भी शक्ति शाली एवं आकर्षित हो एक न एक दिन अच्छाई ही की विजय अवश्य होती है।

रामायण गाथा का पठन या सुनना एक भाग्य शाली मौका है। इस ग्रंथ को पढने से सभी देवी देवता का कृपा कटाक्ष मिलती है। हमारे दैनंदिन जीवन में आनेवाले बाधाओं को दूर करने के लिए सुंदर कांडा, बाल कांडा जैसे कुछ अध्यायों को नियम के अनुसार पठन करें तो सत्फल मिलता है।

व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक विकास के लिए और एक नया समाज निर्माणात्मक अभिवृद्धि के लिए रामायण ग्रंथ उपयुक्त बनता है। रामायण की कुछ ऐसी ही महत्वपूर्ण बाते हैं जिनमें जीवन का सार छिपा है।

रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।

कौसल्या सुप्रजा रामा!

- डॉ.एन.दिव्या

रामो विग्रहवान् धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः।
राजा सर्वस्य लोकस्य देवानामिव वासवः।।
अप्रमेय हि ततेजो यस्य सा जनकात्मजा।
न त्वं समर्थस्तां हुर्तु रामचापाश्रयां वने।।

राम मूर्तिमान धर्म है, सज्ञनशिरोमणि है, उनका पराक्रम परम सत्य है जैसे देवताओं के इन्द्र राजा है वैसे ही वे सब लोकों के राजा है। वह तेज असीम जिनकी पत्नी जनकनंदिनी जानकी है। ये बाते न वशिष्ठ कहा था और न ही विभीषण। एक राक्षस होकर भी राम के उदात्त गुण को जानकर मारीच ने रावण से कहा। मारीच रावण को समझाता है कि सीता को हरने का विचार नहीं करना चाहिए। ऐसा करना सर्वनाश को निमंत्रण देना है। मारीच रावण को सही रास्ते पर ला न सका। खुद राम के बाणों से मारा जाता है। शत्रु पक्ष के लोग भी राम के गुणों को सराह ने के कारण राम आदर्श पुरुष बने। ऐसे लोक रक्षक राम का जन्म स्थान - अयोध्या।

युग - त्रेतायुग

वंश- इक्ष्वाक

माता-पिता - कौसल्या, दशरथ

भाई - लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न

पत्नी - सीता

ससुर - मिथिला के राजा जनक

गुरु - विश्वामित्र और वशिष्ठ

राम ने धर्म की रक्षा के लिए जिंदगी बिताये थे। अयोध्या नगर में आकर विश्वामित्र अपनी यज्ञ की रक्षा के लिए रघुनंदन को अपने साथ भेजने के लिए दशरथ से पूछते हैं। यह बात सुनते ही दशरथ चिंतित होते हैं। विश्वामित्र राजा को समझाकर राम को अपने साथ वन ले जाते हैं। राम जंगल में राक्षसों का वध करके विश्वामित्र की यज्ञ की रक्षा करते है। फिर राम विश्वामित्र के साथ मिथिला नगर को जाते हैं। वहाँ सीता स्वयंवर में शिवधनुर्भंग करते हैं। भरी सभा में जनक महाराज सीता के साथ पाणिग्रहण करने की बात कहते हैं। तब राम जनक महाराज से कहते हैं कि मैं अपने माँ बाप की आज्ञा लेने के बाद

ही कल्याण कंकण को धारण करूँगा। इस तरह जन्म देनेवाले माँ-बाप को ऊँचा स्थान दिलानेवाला पुत्र कौसल्या नंदन राम है।

यह सत्य है कि राम के जीवन में जिन मुश्किलों का सामना करना पडा था। ऐसा जीवन और कोई न बिताया होगा। जब राम सीता से शादी करते हैं तब परशुराम वहाँ आकर राम और सीता को आशीर्वाद देकर चले जाते हैं। दूसरे दिन दशरथ अपने पुत्र और बहु के साथ अयोध्या लौटते समय मार्ग मध्य में परशुराम प्रत्यक्ष होते हैं, उन्हें देखकर सब डर जाते हैं। परशुराम कहते हैं कि शिवधनुर्भंग करना कोई बडी बात नहीं इस विष्णु धनुष को उठाओ। भडकनेवाले भार्गव की बातें सुनकर राम शांत स्वभाव से पहले परशुराम को प्रणाम करते है। फिर आसानी से विष्णु धनुष को उठाकर परशुराम के तपःफल को नष्ट करते हैं। परशुराम संतुष्ट होकर राम को आशीर्वाद देते हैं।

शादी के बाद राम सुखपूर्ण जिंदगी न बिताकर वनवास की जिंदगी बिताना पडा। राम ने कभी भी किसी पद की कामना नहीं किया। राजा दशरथ अपने जेष्ठ पुत्र को अयोध्या के सिंहासन पर बिठाना चाहते हैं। इतनें में कैकेई अपने पति दशरथ से राम को वनवास भेजने का वर माँगती है। स्वयं दशरथ यह बात अपने पुत्र से नहीं कहते है। स्वयं राम कैकेई के पास जाकर पूछते हैं कि आगे क्या करना है। कैकेई राम से अपने पति दशरथ की बात के रूप में 14 वर्ष वन जाने की बात कहती है।

जिस मुहूर्त को राम अयोध्या के सिंहासन पर आसीन होना था, उस मुहूर्त को राम अपनी पत्नी सीता के साथ वनवास जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस प्रकार सीतापति पितृवाक्य का पालन करते हैं। ऐसा वे अपने

पिता की मर्यादा की रक्षा करते हैं। जितना ढूँढने पर भी राम जैसा धर्मपरायण और मितभाषी मिलना दुर्लभ है।

राम अपनी पत्नी सीता और लक्ष्मण के साथ वनवास जाते है। सबसे पहले गिरिराज केवट राम को देखकर आँखों से आँसू बहाने लगता है। वह अपना राज्य श्रीराम को देना चाहता है। लेकिन राम कहते है कि अगर मैं राज्य चाहता तो अयोध्या में ही रहता था। इतनी दूर नहीं आता था। हमें नदी के उस पार सुरक्षा से ले जाओ।

राम बडे धर्मज्ञ थे। वालि सुग्रीव का युद्ध समाप्त होता है। राम युद्ध समाप्ति के बाद सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बनाते हैं। जब सुग्रीव राम और लक्ष्मण को अपने अंतःपुर में रहने के लिए कहता है तब राम सुग्रीव की निमंत्रण को तिरस्कार करते हुए कहते है कि गाँवों में और शहर में ठहरना वनवास के नियमों का विरुद्ध होता है। यदि में तुम्हारे अंतःपुर में ठहरूँगा तो वनवास के नियमों का उल्लंघन होता है। इसलिए राम ठंड में कांपते हुए प्रश्रवण गिरि शिखरों पर कुछ महीने ठहरते हैं। दिये हुए वचन का पालन करने में राम समर्थ है। उदाहरण के लिए सेतु-बंधन का कार्य हुआ ही नहीं था, और रावण के ऊपर बाण छोडा तक नहीं था। इतने में लंका से विभीषण शरण माँगते हुए श्रीराम के चरणों पर गिरता है। तुरंत राम विभीषण के सर पर पानी छिडककर लंका को राजा के रूप में घोषित करते हैं। तब लक्ष्मण अपने मन की संदेह को प्रकट करता है कि अगर रावण का मन परिवर्तित होकर वह भी पैर पकडेगा तो क्या करोगे? तब विभीषण को किस देश का राजा बनाओगे? लक्ष्मण की बातें सुनकर राम बिना सोचे कहते है कि अयोध्या राज्य को देकर बात निभायेंगे। राम की यह बात सुनकर लक्ष्मण और अन्य लोग एक पल के लिए निश्चेष्ट हो जाते हैं। वानर सेना सब लोग मिलकर मुक्त कंठ से राम की जय जय करते हैं।

राम निराडंबर जीवन को बिताते हैं। शबरी के झूठे बेर को खुशी से खाते हैं और उसे मोक्ष प्रदान करते हैं। राम एकपत्नीव्रत का पालन अंत तक करते हैं। पिता को तीन पत्नियाँ थी। बहु पत्नीत्व उस जमाने में राजाओं के लिए निषिध नहीं था। फिर भी राम एक ही बात एक ही बाण और एक ही पत्नी का व्रत का पालन करते हैं। राम जनता की बात को मानकर ही राज्य का पालन करते हैं। जिंदगी भर इस बात पर ही चलते हैं।

श्रीराम का जिंदगी पूर्ण संस्कार युक्त है। वे एक आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श राजा, आदर्श शिष्य और आदर्श भाई के रूप में संपूर्ण मानवजाती को पुनीत बनाने का श्रेय राम को ही मिलता है।

आज हिन्दूजाति के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक जीवन पर मर्यादापुरुषोत्तम राम का अमिट प्रभाव है। हिन्दू परिवार में जन्म एवं विवाह के अवसरों पर रामजन्म संबंधी एवं रामविवाह संबंधी गीत गाये जाते हैं। शरीर की अंतिम यात्रा ''राम नाम सत्य है'' की ध्वनी के साथ होती है। भारत के कोने कोने में राम के मंदिर है। लाखों लोग प्रतिदिन रामायण का पाठ करते हैं। अयोध्या, रामेश्वर, पंचवटी, चित्रकूट आदि तीर्थों की यात्रा करते हैं। हिन्दुओं के ही नहीं थाईलेण्ड आदि देशों के निवासियों के नाम भी रामायण से संबंधित है। राम प्रत्येक हिन्दू के जीवन में रम रहे हैं। ईश्वर के नामों में सर्वप्रसिद्ध नाम राम ही है। इसलिए राम की पूजा भक्ति से करके उनके कृपा के पात्र बनेंगे।

भक्ति का साम्राज्य एक अगाध सागर जैसा है। इष्टदेव के दर्शन के लिए अनुग्रह प्राप्ति के लिए बेचैनी से इंतजार करने वाले भक्तों की जीवन की रीतियाँ भी विभिन्न हैं। कुछ लोगों के लिए जप फलसिद्धि का मार्ग हो सकता है। और कुछ लोगों के लिए अरण्यवास, तप, योग, मार्गदर्शकत्व प्रशस्त हो सकता है। किंतु कलियुग में नामस्मरण, ध्यान देवतानुग्रह के लिए सरल उपाय है। इस बात का उल्लेख श्रेष्ठलोगों ने किया है। सभी अन्य उपायों की अपेक्षा संगीत का मार्ग अभीष्टसिद्धि के लिए श्रेष्ठ है। आपात मधुर संगीत निपुणों की साधना में, कीर्तनों में भगवान् का वास होता है। खुद भगवान् ने इस बात का उल्लेख किया है कि उन्हें वैकुण्ठ से ज्यादा संगीत की दुनियाँ पसंद है। अतः जितने भी कीर्तन-कार हैं, उन्होंने भक्ति संकीर्तन के मार्ग का चयन किया है। ऐसे लोगों के लिए इष्ट का दर्शन अत्यंत सुलभ है। हाथ में विद्यमान आवले की तरह है।

विभिन्न आकृतियों में दिखाई देने वाला विश्व ईश्वर का ही स्वरूप है। किंतु पुराणों में कहा गया है कि परमात्मा का दर्शन तेज के रूप में अपने हृदय में कर सकते हैं। अथवा चर्मचक्षुओं के माध्यम से भी कर सकते हैं। मानव जीवन का परम प्रयोजन भी यही है। भगवान के दर्शन का मुख्य साधन भक्ति है। भगवान पर भक्ति भावना को नहीं बढ़ाने वाले कर्म, ज्ञान व्यर्थ है। अतः अन्नमय्या ने कहा है कि भक्तिहीन व्यक्ति की जाति, शास्त्रपांडित्य, जप, तप इत्यादि व्यर्थ की तरह भावना किया है।

यदि हम पुराणों का अवलोकन करेंगे तो हमे पता चलता है कि ध्रुव के लिए वासुदेव का नाम स्मरण ही श्री महाविष्णु के प्रत्यक्ष दर्शन का मार्ग

ताल्लपाका अन्नमय्या को श्री वेंकटेश्वर का दर्शन

तेलुगु मूल
डॉ.ए.विभीषणशर्मा

अनुवादक
डॉ.के.सुधाकर राव

को प्रशस्त किया। इसी तरह प्रह्लाद को महाविष्णु ने नरसिंह के रूप में दर्शन दिया। ये दोनों बाल भक्त थें। किंतु अन्नमय्या के लिए वेंकटेश्वर का मंत्र की उपादेय हो गया। इस बात का उल्लेख अन्नमय्या ने 'अन्निमंत्रमुलिन्दे आवहिंचेनु' नामक कीर्तन में किया है। वेंकटेश सभी देवताओं का समेकित स्वरूप है। अतः सभी मंत्र मिलकर 'वेंकटेश मंत्र' बनकर अपने जीवन के साफल्य का कारण बन गया। इस बात का उल्लेख उपर्युक्त भक्तिगीत में अन्नमय्या ने किया है।

अन्नमय्या को बचपन से ही ''परमज्ञान की संपत्ति'' की प्राप्ति हुई। तिरुमलेश के प्रसाद के बिना अन्य पदार्थ को स्वीकार नहीं करते थे। इस प्रकार की परिपक्वता उनमें आगई। 'वेंकटपति' की महिमा का वर्णन करने वाले गीत का श्रवण किए बगैर उनको नींद नहीं आती थी। अन्नमय्या इस तरह भाग्य शाली थे। बाल्यावस्था में उनके हृदय में भक्ति के बीजों का आवापन हो गया था। अन्नमय्या को श्री वेंकटेश्वर का दर्शन कब हुआ? ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण कीर्तनों में इस बात का उल्लेख दिखाई देता है।

प्राचीन ताम्रपत्रों में - ''स्वस्ति श्री जयाभ्युदय शालि वाहन शक वर्ष सन् 1408 में क्रोधि नामक वर्ष में ताल्लपाका अन्नमाचार्य के अवतरण के सोलह साल के बाद श्री वेंकटेश्वर ने दर्शन दिया।''

ताम्रपत्र पर विद्यमान इस सबूत के अनुसार 16वें वर्ष में अन्नमय्या को श्री बालाजी का दर्शन संप्राप्त हुआ। इन सबूतों के मुताबिक इतिहास विशेषज्ञों ने बताया कि अन्नमय्या का जन्म सन् 1408 में हुआ था। सोलहवें वर्ष में अर्थात् सन् 1424 में उन्हें श्री वेंकटेश्वर का दर्शन संप्राप्त हुआ। उन्होंने हर रोज एक भक्तिगीत के हिसाब से गीतों की रचना की। इस बात की पुष्टि इतिहासकारों ने की।

उपचारों में 'षोडश' संख्या अत्यंत प्रधान है। सोलहवाँ वर्ष अत्यंत प्रधान है। संस्कारों में षोडश संस्कार प्रधान हैं। पारिश्रमिक में 16, 116, 1116 को अत्यंत प्रधानता दी गई है। जीवन में 16वें वर्ष में अन्नमय्या को श्री वेंकटेश्वर का दर्शन संप्राप्त हुआ। वे सचमुच इस मामले में अत्यंत भाग्यशाली हो।

यदि हम अन्नमय्या के भक्तिगीतों का अवलोकन करेंगे तो इस बात का पता चलता है कि इस कीर्तनकार को तीन अवस्थाओं में वेंकटेश्वर का दर्शन संप्राप्त हुआ प्रथम - स्वप्नदर्शन।

स्वप्नदर्शन

स्वप्न में दर्शन प्राप्ति के लिए बुजुर्गों से सुने हुए अंश, अनुभवों का समन्वय कारण बन सकता है।

दृश्यते भगवान्यस्य, स्वप्ने सर्वशुभावहः।
तस्मिन्नेव दृढ़ाभक्तिः, जायते नात्र संशयः।।

इस प्रकार आगम शास्त्रों में कहा गया है कि स्वप्न में दर्शन देने वाले देवता पर अनन्य भक्ति उत्पन्न होती है। किंतु

अन्नमय्या को श्री वेंकटेश्वर के दर्शन से पहले मोकालिमिट्टा के पास अलमेलुमंगा माता का दर्शन हुआ। आल्वार लोग यदि भगवान् का साक्षात् दर्शन प्राप्त करते हैं तो 'तिरुक्कुंडेन्' के सामने कहते हैं - ''माता का दर्शन किया हमने''। आज भी श्रीवैष्णव पहले अलमेलुमंगम्मा का दर्शन कर बाद में वेंकटेश का दर्शन करते हैं। अन्नमाचार्य के चरित्र के अनुसार जब अन्नमय्या पैदल मार्ग पर चलने से थक गया था तब अलमेलुमंगम्मा ने उसको वेंकटेश का प्रसाद प्रदान कर पैदल मार्ग के नियमों को बताया था। उस समय इतिहासकारों का कहना है कि अन्नमय्या ने तत्काल 'वेंकटेश्वर शतकम्' की रचना की। इस शतक में भगवान वेंकटेश्वर की लीलाविशेषों का वर्णन किया गया है। स्वप्न में वेंकटेश दर्शन अन्नमय्या को प्राप्त हुआ। इस बात की पुष्टि निम्मलिखित भक्तिगीत में की गई है।

अभी यहाँ मैं ने स्वप्न देखा
सभी लोकों के पति श्री वेंकटेश्वर को देखा ॥अभी॥

मैं ने अत्यंत महोन्नत शेषाद्रिशिखर को देखा
असमान गोपुर के कांतिपुंज को देखा
शतकोटि सूर्यों के तेज को प्रकाशमान देखा
ब्रह्मा को देखा, मैं अचानक जाग उठा॥
॥अभी॥

मैं ने दोनों तरफ स्वर्णरत्नकवाट के कांति को देखा
प्रखर दीपकों के समूह को देखा
अनुपम रत्नमय किरीट को देखा
स्वर्णांबर को देखा, अचानक जाग उठा॥
॥अभी॥

मैं ने अपूर्व शंख चक्रों को दोनों तरफ देखा
अद्वितीय अभयहस्त को देखा
श्री वेंकटेश्वर के साक्षत् दर्शन किया
हरि को देखा, गुरु को देखा, अचानक जाग उठा॥
॥अभी॥

इस भक्तिगीत में स्वप्नदर्शन के वैभव का सुंदर वर्णन किया है। यह एक अच्छा उदाहरण है।

द्वितीय अर्चावतार दर्शन

अन्नमय्या ने तिरुमल पहुँचकर यात्रीगण के माध्यम से वेंकटेश के अंग-रंग वैभव को सुनकर आनंद को प्राप्त किया। किंतु तिरुमल में विराजमान प्रभु स्वयंभुमूर्ति है।

इस प्रकार की अर्चामूर्ति का सर्वावयवसौन्दर्य का वर्णन अन्नमय्या के भक्तिगीतों में बार-बार दिखाई देता है। खासकर वरदहस्त का वर्णन श्री वेंकटेश के चरणों का वर्णन अद्वितीय है।

उदाहरणार्थ -

''इतने सारे लोगों को अभय प्रदान करने वाला हाथ
सुदर सुवर्णमय हस्त'' ॥हाथ॥

''ब्रह्म से प्रक्षालित चरण
स्वयं ब्रह्म के रूप में परिवर्तित चरण'' के लिए अर्चावतार दर्शन के साथ उत्सवमूर्तियों के लिए किये जाने वाले नित्य, साप्ताहिक, मासिक उत्सवों का वर्णन' भी प्रभु के दर्शन का एक अंश ही है। अन्नमय्या मंदिर कवि है। इसीलिए प्रत्येक उत्सव में प्रभु के दर्शन का अनुभव को उन्होंने प्राप्त किया। मंदिर के उत्सवों में अभिषेकोत्सव अत्यंत प्रधान है। उसी प्रकार कल्याणोत्सव, ब्रह्मोत्सव में अन्नमय्या को मलयप्पा का दर्शन भाग्य संप्राप्त हुआ।

'वोकपरिनोकपरि' (एक बार एक बार) नामक भक्ति गीत में अन्नमय्या की दर्शनानुभूति ने पढ़ने वालों को, गायन करने वालों को, सुनने वालों की दिव्यानुभव प्रदान किया। यह अर्चामूर्ति दर्शन भाग्य के लिए एक समुचित उदाहरण है।

अन्नमय्या ने 16वें वर्ष में 25 का दर्शन को प्राप्त किया था। उस समय उन्होंने किन भक्तिगीतों का गायन किया?

इस बात की जानकारी उपलब्ध नही है। किन्तु इसके लिए दो, तीन उपाय हैं। कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण ने अपने विराट् स्वरूप का अर्जुन को दर्शन करवाया था। उस समय अर्जुन आश्चर्य चकित हुआ था। अन्नमय्या ने भी आश्चर्य प्राप्त किया होगा। साधारण रूप से प्रभु के साक्षात् दर्शन के समय स्तुतियों में संबोधनों का सिल-सिला जारी रहता है। यहाँ पर मूल रूप से विष्णु के अवतारों की पूजा चल रही है। किंतु नारायणांश सर्वोपरि है। अन्नमय्या ने नारायण के बारे में बहुत सारे भक्तिगीतों की रचना की। हो सकता है कि उनमें बहुत सारे गीत प्रभुदर्शन के उपरांत विरचित किये गये हैं।

नमो नारायणाय

नारायणाय सगुणब्रह्मणे सर्व -

पारायणाय शोभनमूर्तये नमो

नित्याय विबुधसंस्तुत्याय नित्याधि

पत्याय प्रत्यक्षाय सन्मानसां -

गत्याय जगदवनकृत्याय ते नमो

पात्रदानोत्सव प्रथितवेंकटराय

धात्रीश कामितार्थ प्रदाय

गोत्र भिन्मणिरुचिरगात्राय रविचन्द्र

नेत्राय शेषाद्रि निलयाय ते नमो नारायणाय

अपने बचपन से ही अन्नमय्या वरद वेंकटेश के भक्त थे। अतः प्रभु के दर्शन होने के उपरांत उनको पौराणिक भक्त श्रेष्ठों की याद आ गई हो।

ध्रुववरदा संस्तुतवरदा

नूतन इस आर्त की रक्षा करो...

उपर्युक्त भक्तिगीत में गजराज, काकासुर, विभीषण, अक्रूर, अंबरीष, द्रौपदी-अर्जुन जैसे भक्तों का उल्लेख करते हुए 'प्रह्लाद वरदा' कहना भक्ति के ध्वज को लहराना ही है। यह गलत नहीं।

अन्नमय्या कवि श्रीहरि के नन्दक खड्ग अंश से उत्पन्न है। अन्नमय्या के भक्तिगीतों के गायन करने के माध्यम से साधारण व्यक्ति को भी वेंकटेश का दर्शन सुलभ है। अनुसंधान कारों का कहना है कि प्रभु के साक्षात् दर्शन के समय अन्नमय्या ने निम्नलिखित भक्तिगीत का गायन किया था।

देखा मैंने सुन्दर शरीर और मालाएँ

सम्मोहक दृष्टि को देखा हंसमुख भगवान् को

देखा सुवर्णमयचरण चरणों में घुंघुरुओं को

देखा सुंदर पीतांबर को देखा

देखा सुंदर मेखला एवं कटिसूत्र को ॥देखा॥

देखा कमलस्वरूप नाभि को सुंदर उदर को

देखा गरिमामय वरदहस्त को कटिहस्त को

देखा वक्षःस्थल पर कौस्तुभ को अनेक हारों को

॥देखा॥

खडी हुई मूर्ति की आराधना चरणों से प्रारंभ करना बुजुर्गों का नियम है। इस नियम का पालन करते हुए उपर्युक्त गीत की रचना की है। 'शरणुशरणु' जैसे गीतों का गायन शायद अन्नमय्या से प्रभु के दर्शन के समय किया होगा।

शरण शरण सुरेन्द्र सन्नुत शरण श्रीसतिवल्लभा शरण राक्षसगर्वनाशक शरण वेंकटनायक कमलधर कमलमित्र कमलशत्रु पुत्र क्रम में आप की सेवा के लिए अब इंतजार कर रहे हैं। सतर्क हो! ॥शरण॥

इन्द्र, ऋषिगण दिशाधीश, किन्नर, सिद्द रंभादि अप्सराएँ वैभव के साथ इंतजार कर रहे हैं। सतर्क हो! ॥शरण॥

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

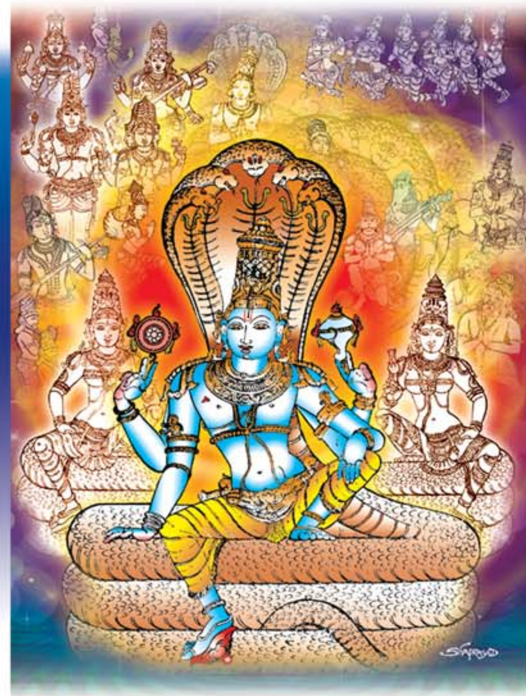

3. तोण्डै नाडु दिव्य क्षेत्र

48) तिरुऊरहम - (कांचीपुरम)

मूलमूर्ति - तिरुविक्रमन (तमिल में - उळहळन्द पेरुमाल) पश्चिमाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

उत्सवर - पेरहत्तान।

तायार (माताजी) - अमुदवल्लि नाच्चियार, अमृतवल्लि।

तीर्थ - नाग तीर्थ (शेष तीर्थ)।

विमान - सारश्रीकर विमान।

प्रत्यक्ष - आदिशेष।

यह मंदिर बस अड्डे के पास में है। इस सन्निधि-ऊरहम के अलावा, नीरहम, कारहम्, कारवानम आदि तीन दिव्य क्षेत्रों के भगवान विराजमान हैं। (संभव हैं पुराने मंदिर शिथिल हो गए। यहाँ के भगवान) यहाँ ऊरहम मंदिर में विराजमान किए गए अनुसार यह ऐतीह्य है की महा बलिचक्रवर्ति की प्रार्थना के अनुसार उनको तिरुविक्रम रूप के दर्शन देने, सत्यव्रत क्षेत्र में तिरुविक्रम रूप में पुनः अवतरित होकर दर्शन दिए।

तिरुविक्रम (उलहळन्द पेरुमाल) दोनों एक दिव्य-क्षेत्र माना जाता है। यह भी ऐतीह है कि उलहळन्द पेरुमाल सन्निधि के पास एक दूसरी छोटी सन्निधि में भगवान ने आदिशेष के रूप में महाबलि को दर्शन दिए। शायद वही 'ऊरहम' नाम पडा हो।

मंगलाशासन - 2 आल्वार; 6 दिव्य पद।

49) तिरुनीरहम (कांचीपुरम)

पेरिय कांचीपुरम में ऊरहम (उलहळन्द पेरुमाल) कोविल के अंदर ही (उत्तर प्राकार में) विराजमान हैं। अलग सन्निधि हैं। (इसका विवरण उपलब्ध नहीं कि पुराना क्षेत्र कहाँ था।)

उत्सवर - जगदीश्वर, पश्चिमाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - निलमंगै वल्लि।

तीर्थ - अक्रूर तीर्थ।

विमान - जगदीश्वर विमान।

प्रत्यक्ष - अक्रुरर।

मंगलाशासन - 1 आल्वार; 1 दिव्य पद।

50) तिरुक्कारहम - (कांचीपुरम)

पेरिय कांचीपुरम से ऊरहम - उलहळन्द पेरुमाल कोयिल के प्राकार में इनकी सन्निधि हैं।

मूलमूर्ति - करुणाकर पेरुमाल - पश्चिमाभिमुखी खड़े दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - पद्मामणि नाच्चियार।

तीर्थ - अक्राय तीर्थ।

विमान - वामन विमान, रम्य विमान।

प्रत्यक्ष - कार्‌ह महर्षि। (इसका विवरण उपलब्ध है कि यह क्षेत्र - सन्निधि आदि कहाँ रहा?)

मंगलाशासन - 1 आल्वार; 1 दिव्य पद।

क्रमशः

उगादि

-डॉ.बी.के.माधवी

उगादि में 'उग' का अर्थ है नक्षत्र गमन। नक्षत्र गमन की आदि उगादि यानि कि सृष्टि के आरंभ उगादि से हुई है। युग माने द्वय या जोडी, युग के प्रारंभ का संकेत के रूप में मनानेवाले त्योहार उगादि है। इसे संवत्सरादि भी कहते हैं। ब्रह्मदेव अपनी सृष्टि को प्रारंभ किये पहले दिन के प्रतीक के रूप में उगादि त्योहार को मनाते हैं। चांद्रमान के अनुसार चैत्रमास के शुक्लपक्ष में सूर्योदय समय में पाड्यमी तिथि जिस दिन रहता है। उस दिन उगादि त्योहार मनाते हैं। वसंत ऋतु होने के कारण प्रकृति के सारे पेड हरा-भरा, नये-नये पत्तों से, फूल परिमलों से शोभायमान रूप से दृष्टिगत होनेवाले सुंदर दृश्यों को देखकर कोयल पुलकित होकर हमारे कानों को पसंदभरा स्वरों का रागालापन सुनती है।

मानव ने अपने आविर्भाव से पहले तथा बाद में गुजरनेवाले काल की गणना के लिए जिस कालमान को अपनाया, उसे वर्ष या संवत्सर कहते हैं। ठीक उसी प्रकार मिनटों, घंटों, दिनों, महीनों, वर्षों में काल को मापा जाता है। दिन-रातों या महीनों के द्वारा अनंत काल को मापना कठिन कार्य है। इसलिए मानव ने सबसे बडा मापदंड, संवत्सर को लिया। यह 'संवत्सर' निर्धारित परिवर्तनों से आरंभ होकर अंत होता है। उगादि से प्रारंभ होनेवाले नये वर्षों के नाम हमारे बुजुर्गों ने 'प्रभव' से लेकर ''अक्षय'' तक रखे। ''प्रभव'' वर्ष से प्रारंभ होकर ''अक्षय'' वर्ष से अंत होनेवाली आवृत्ति पुनः ''प्रभव'' से प्रारंभ होती है। अर्थात् काल-चक्र के भ्रमण में छः ऋतुओं से एक वर्ष, साठ वर्षों से एक आवृत्ति की पूर्ति होती है।

आकाश में दिखाई देनेवाले चन्द्रमा के घटाव-बढाव के आधार पर काल-गणना प्रारंभ हुई। चंद्र-मंडल कुछ दिन बढकर, कुछ दिन घटकर, अट्ठाईस दिनों में फिर से पूर्णत्व को प्राप्त करता है। इसी बात को दृष्टि में रखकर पूर्णिमा से लेकर पूर्णिमा तक के बीच के काल की गणना करके चन्द्रमा के नाम पर व्यवहृत किया। मासः याने चन्द्र का अस्तित्व है। चंद्रमा की पहली तिरछी रेखा, प्रतिपदा से प्रारंभ होकर कृष्णा अमावास्या से समाप्त होनेवाला समय को ही दाक्षिणात्य महीने के रूप में स्वीकार करते रहने से, सब लोग उसी परिगणना के आधार पर व्रतों का निर्माण किया। दक्षिण भारत के लोग ही नहीं, समस्त वैदिक कर्मों को आचरण करने वाले लोग इसी चान्द्रमान से संबंधित मास व वर्ष की पद्धति का अनुसरण करते हैं। नक्षत्र मंडल में चन्द्रमा का प्रवेश जिन-जिन नक्षत्रों में होता है, उन-उन नक्षत्रों के नाम पर महीनों के नाम रखे गये। उदाहरण के लिए यदि चित्ता नक्षत्र में पूर्ण

चन्द्र हो, तो चैत्र, विशाखा नक्षत्र में पूर्ण चंद्र हो, तो वैशाख, श्रवणा नक्षत्र में हो तो श्रावण कहकर, बुजुर्गों ने महीनों के नाम निर्धारित किये। वैदिक वाङ्मय के अनुसार चार वर्षों का काल एक युग है। तैत्तरीय ब्राह्मण में भी यही बात बतायी गयी है। पुराणों के अनुसार युग चार हैं। वे ही कृतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग है। हम जिन चार युगों को जानते हैं, उन चारों युगों को मिलाकर ''महायुग'' या ''दिव्ययुग'' कहते हैं। ऐसे हजार दिव्य युगों की पूर्ति होने पर ब्रह्म के लिए एक दिन होगा। इसी तरह मनुष्यों के 360 वर्ष देवताओं के लिए एक वर्ष होगा, ऐसा ऋग्वेद में कहा गया है। प्रत्येक युग के लिए अलग-अलग देवता तथा पूजा की पद्धतियाँ हैं। वर्तमान कलियुग के अधिपति महादेवजी हैं, तो पूजा की विधि जप है, ऐसा कहा गया है। इस प्रकार युगों के प्रारंभिक दिन याने उगादि के दिन ब्रह्म ने सर्वप्रथम स्त्री की सृष्टि करके उसके द्वारा यावत सृष्टि का श्रीगणेश किया। न केवल अपने ही राज्य में बल्कि भारत के विविध प्रांतों के लोग विविध नामों से व्यवहृत के उगादि का आचरण करते हैं। उत्तरी भारत तथा पंजाब के लोग इस पर्व-दिन को ''बैशाखी'' नाम से अभिवर्णन करते हुए दुराक्रमण पर आक्रमण के रूप में मानते हैं। वैशाखी के पर्व-दिन की प्रस्तावनाएँ अनेकों पुराणों में भी मिलती हैं। महाराष्ट्र के लोग इस उगादि को 'गुडिपडवा' नाम से मानते हैं। इस त्योहार के दिन गरीब लोगों को अन्न-दान तथा वस्त्र-दान करने की प्रथा आज भी प्रचार में है, जिसे महाराजा शिवाजी ने प्रचार में रखा। पश्चिम बंगाल, बिहार, उडीशा, गुजरात राज्यों में लोग इस त्यौहार को ''चैत्र पर्व'' या ''वसंतोत्सव'' नाम से मनाते हैं। मध्यप्रदेश में इस उगादि के दिन हर किसी को, किसी न किसी खेल में भाग लेने का आचार अमल में है।

इस प्रकार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन आनेवाली उगादि, हमारा पहला त्यौहार बन गया। उगादि के दिन लोग सबेरे ही मंगल स्नान (अभ्यंगन स्नान) करते हैं। अपनी-अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार नये वस्त्र पहनते हैं। चूत पत्रों के तोरणों से ही त्योहार की शोभा बढती है। घर की सफाई करके, रंग-बिरंगी रंगवल्लियों से सजाकर, मंटप का निर्माण करके उसमें उस वर्ष का नूतन पंचांग उस वर्ष से सम्बन्धित संवत्सरादि-देवता की प्रतिष्ठापना करके षोडशोपचार सहित पूजा-अर्चना करना हमारा सम्प्रदाय है। भक्ष्य (मीठे पकवान) षड्रुचियों से

बनाये गये उगादि-पच्चडि (आचार) नैवेद्य के रूप में चढाते हैं। इस दिन उगादि-पच्चडि तैयार करना अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

नीम के फूल, नया गुड, नई इमली, कच्चे आम के टुकडे, हरि मिर्च के टुकडे, नमन, कशाकश इत्यादि मिलाकर उगादि पच्चडि तैयार करते हैं। पूजा के बाद पहले उगादि पच्चडि स्वीकार करने के बाद ही और कुछ खाना-पीना होता है। क्योंकि षड्रुचियों के इस मिश्रण को मानव के सुख-दुखात्मक मिश्रित जीवन का प्रतीक मानते हैं। इसका मतलब है, मनुष्य उस साल के अनुभवों में आनेवाले सुख-दुखों का आभास उसी दिन महसूस करके, भविष्य में भोगने का आदी बनता है। इसके बाद मंदिरों में इकट्ठा होकर पंचांग श्रवण करते हैं। उस वर्ष घटित होनेवाले योग, आय-व्यय, मानापमान जैसे विषय यानि कि अपनी राशिफल पंचांग द्वारा जानकर उसके अनुकूल चलने की कोशिश करते हैं। उगादि से लेकर रामनवमी तक श्रीराम के नवरात्रि उत्सव मनाते हैं। इसे तेलुगु के संवत्सरादि यानि कि जिस प्रकार दुनिया के सारे देशों में जनवरी पहले तारीख को नूतन वर्ष मनाते हैं उसी प्रकार तेलुगुवालों के लिए यह नूतन वर्ष का शुभ दिन उगादि से शुरू होता है। तेलुगु के साठ वर्षों में आवृत्ति के रूप में हर उगादि के दिन नूतन वर्ष जैसे ''प्रभव'', 'विभव' नामों से शुरू होता है। यह केवल तेलुगु वाले ही नहीं भारत के और भारत के बाहर कुछ देशों में प्रत्येक नाम से मनाये जाते हैं। इस दिन सब लोग प्रातःकाल ही उठकर तिल के तेल से अभ्यंगन स्नान करके नये कपडे पहनकर उगादि पच्चडि और पंचांग श्रवण के साथ किसी मंदिर जाकर अपनी मन्नतों को सुनाते हैं। यानि साल भर अपने जीवन में नव वसंत भरने की प्रार्थना करते हैं। वैसे ही पंचांग श्रवण के बाद साल में अपने जीवन के अच्छे-बुरे विषयों की जानकारी प्राप्त करके उसी के अनुरूप भगवान से प्रार्थना करते हुए अच्छे जीवन देने की माँग करते हैं।

श्रीवैकुंठ को छोडकर भक्तजनों की रक्षा करने के लिए भूलोक पधारे श्री वेंकटेश्वर स्वामी भक्तों से पूजाएँ स्वीकार कर रहे हैं। इस उगादि के दिन तिरुमल मंदिर में ''उगादि आस्थान'' नाम से अत्यंत वैभव के रूप में मनाते हैं। इस दिन तिरुमल मंदिर में पंचांगश्रवण सुनाते हैं। इस ''श्री क्रोधि'' नामक उगादि के नये वर्ष में श्री वेंकटेश्वर स्वामी के कृपापात्र बनकर जीवन को आनंदमय बनाने के लिए स्वामी से प्रार्थना करेंगे।

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चयनित पद्य)

विद्वत्पद्धति

कलुष मानसुलकु गान्पिंपगा रादु
अड्डुसु लोन भानुडडगिनट्लु
तेटनीरु पुण्यु-देह मट्लुंडुनु
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।27।।

निर्मल चित्तवाले विद्वान् को भगवान् का दर्शन स्पष्ट रूप से हो जाता है, कलुषित मनवाले को कुछ भी नहीं दिखाई देता। सूर्य का प्रतिबिंब स्वच्छ स्फटिक जल में हम साफ देख लेते हैं, पंकिल तलैये में नहीं। यही ज्ञानी तथा अज्ञानी में अंतर है।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

पत्थर रथ (शिला रथ)

वाशलम् एल्लप्पा नायकर नामक भक्त ने इसका निर्माण कराया है। यह धर्मम् (सेवा) सर्वजित नामक संवत्सर के चित्तिरै मास (चैत्रमास) में संपन्न किया गया है (शक संवत्सर 1449 = 29, मार्च 1527)। इसकी सूचना खंड III क्र.सं. 168 में उल्लिखित लेख से प्राप्त होती है। यह विजयनगर साम्राज्य के सम्राट कृष्णदेवराय के समय में हुआ है। रिकार्ड में दाता का नाम मिलता है। संभव है कि शिला रथ कृष्णदेव से कुछ पूर्व ही निर्मित हो गया हो। (यह शिला रथ आज वहाँ नहीं है जहाँ पहले स्थापित था।) पहले यह शिला रथ मंदिर की उत्तर-पूर्वी कोने में था। खंड V, क्र.सं. 16 वाले लेख में इस शिला रथ का निर्माण सेव्वराय वडमालै अप्पर के पुत्र नागप्पन द्वारा श्रद्धापूर्वक दिये दान से बनाया गया है। इस पत्र में कोई समय सूचित नहीं है। यह तो निश्चय है कि शिला रथ के साथ जो धर्मशाला का जिक्र किया गया है, उससे पहले ही शिला रथ का निर्माण हुआ है। वाशलम् एल्लप्पा नायकर ने मार्च, 1527 में सत्रम् (धर्मशाला) का निर्माण किया होगा। शिलारथ पत्थर का बना और न हिलनेवाला रथ है (खंड V, क्र.सं. 32)। खंड V, क्र.सं. 2 में एक और सूचना मिलती है। उसके अनुसार वानमामलै जिय्यर और उनके शिष्य कोयिल केल्वि जिय्यर दोनों द्वारा कुम्भ मास (मासि महीने) (प्लव वर्ष, शक संवत्सर 1463 = 27 जनवरी, 1542) के उत्सव के लिए 9 'मनोहर पडि' प्रदान की व्यवस्था है। यह नौ दिन पर्यन्त जलक्रीडा उत्सव (प्लवोत्सव) के समय उत्सवमूर्तियों के लिए प्रसाद वितरण की व्यवस्था है। इसी प्रकार शिला रथ में ऊँजल पर विराजमान भगवान की मूर्तियों के लिए नैवेद्य की व्यवस्था भी की गयी थी। अळगिय-मनवाल मठम् और अन्य प्रान्तों में भी भगवान को नैवेद्य अर्पित किये जाते थे। उत्सवों के समय मूलविराट मूर्ति को भी प्रसाद समर्पण की व्यवस्था में कोई कमी नहीं थी। इसी प्रकार मंदिर की नर्तकी तिरुवेंकटदासी की पुत्रियाँ लिंगसानी और तिरुवेंकटमाणिक्यम् ने 20 मनोहर-पडियों को मलैकुनिय - निन्र - पेरुमाल के अर्पण के लिए दान को भक्ति पूर्वक दिया है। यह क्रोधि

नाम संवत्सर मीन (फल्गुणी) मास (शक संवत्सर 1466 = 27-2-1545) में संपन्न किया गया है। यह कोडै (ग्रीष्म कालीन) उत्सव की शोभायात्रा में 20 वें दिन के लिए भी है। उत्सवविग्रहों के लिए गर्मियों की सेवाओं के लिए भी दान संपन्न किये गये हैं। ये उत्सव शिला रथ में मनाये जाने की बात है (ख. VI, सं.61)।

[[शिला रथ जो लगभग आधा भूमि में धस गया था, पीढियों पर्यन्त तिरुमल में था। इसका स्थान मंदिर की उत्तर-पूर्वी दिशा में था। कुछ वर्ष पहले वहाँ से निकाला गया था। चंद्रगिरि मार्ग के पास वेंकटाद्रि पर आज प्रतिष्ठित मिलता है। जैसे ही भक्त सीढियों से ऊपर पहुँचते है, सीढियाँ खतम होती हैं, वहाँ प्रतिष्ठित रथ दिखाई देता है।]]

उसी प्रकार तिरुपति में भी श्री गोविंदराज मंदिर के पास एक शिला रथ के होने की सूचनाएँ मिलती हैं। आरवीटि वंश के प्रांतीय शासक पोट्लपाटि तिम्मराजय्या ने इसकी व्यवस्था की थी। (देवस्थानम् रिपोर्ट पृ. 253)। यह कर्काटक के अलिय रामराज और सदाशिव राय की ओर से है। यह विश्वावसु नाम संवत्सर में आडि मास में (शक संवत्सर 1467 = 15, जुलाई 1545) श्री गोविंदराज स्वामी उत्सव के लिए बनाया गया है। स्वामी अपनी देवेरियों के साथ शिला रथ के झूले में झूलते थे। यह अन्य प्रसाद समर्पणों सहित व्यवस्थित है। ऐसे पूजार्पण श्री वेंकटेश्वर भगवान, श्री गोविंदराज स्वामी, श्री अच्युत पेरुमाल और श्री वरदराज स्वामी

के लिए भी हैं। तिरुवेंकट माहात्म्य पठन के बाद नैवेद्य उन मंदिरों में सुबह प्रस्तुत किये जाते हैं। (खंड V, क्र.सं. 53)।

[[श्री गोविंदराज स्वामी का शिला रथ तिरुपति में उनके मंदिर के पास रखा गया था। लेकिन अब यहाँ नहीं है। उसका नामों-निशान नहीं मिलते]]

वाहन मंटप और घंटा मंटप

मंदिर के सामने मंदिर से अभिमुख होकर पूर्व वीथि में एक बडा वाहन मंटप है। मंदिर से जब भगवान उत्सवों के समय तिरुवीथियों में शोभायात्राओं के लिए बाहर निकलते हैं, तो पहले वाहन मंटप में आते हैं। वहाँ अलंकृत होकर शोभायात्रा में भगवान पुरवीथियों में (माडावीथियों में) निकलते हैं। यह बाद का ही निर्माण लगता है।

दक्षिण और पूर्व वीथि के मिलन स्थान पर और सन्निधि वीथि के सामने घंटा मंटप स्थित है। सुबह और शाम के समयों में जब पुरोहित मंदिर में प्रवेश करते हैं तब घंटा बजता है। यह महाद्वार के दरवाजों के खुलने का समय होता है। भक्तों के लिए भी यह सूचना देता है। उस मंटप को ''गोल्लवानि मंटपम्'' (ग्वाले का मंटप) भी कहते हैं। आजकल एक घडी भी वहाँ है। वाद्यकार बाजे भी बजाते हैं। मुखद्वार पर द्वार खुलने का ऐलान भी होता है।

(12वाँ अध्याय समाप्त)

* * *

क्रमशः

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

अवतरण

सनातन हिंदु धर्म की परंपरा की पंचांग के अनुसार हर साल चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि के दिन मत्स्य जयंती मनाई जाती है। इस दिन भगवान विष्णु के मत्स्य रूपी अवतार की पूजा करने का विधान है। मत्स्य अवतार भगवान विष्णु के दशावतार यानी 10 अवतारों में पहला अवतार है। इसमें विष्णु जी ने विशालकाय मछली का रूप धारण किया था।

इस रूप में प्रकट होकर श्रीहरि ने प्रलय से सृष्टि को बचाया और वेदों को पुनःप्राप्त किया था। इस मत्स्य अवतार को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। मत्स्य जयंती के दिन जो भी भक्त सच्ची श्रद्धा के साथ उनकी विशेष तौर पर पूजा करते हैं। उस पर श्रीहरि की पूरी कृपा बरसती है और उसके सभी कार्य बिना अड़चन के पूरे होते हैं।

मत्स्य जयंती का शुभ मुहूर्त

भगवान विष्णु की विशेष अराधना के लिए समर्पित मत्स्य जयंती का पर्व 11 अप्रैल 2024 गुरुवार को मनाया जाएगा। पंचांग के अनुसार चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि 11 अप्रैल 2024 को पूजा संपन्न करते है।

मत्स्य जयंती की पूजा विधि

1. प्रातःकाल सुबह सूर्योदय से पहले जल्दी उठकर पवित्र नदी में स्नान करना बहुत शुभ माना जाता है।

2. घर में सफाई करके गंगाजल का छिडकाव करें।

3. इसके बाद भगवान विष्णु की मूर्ति स्थापित करके उनके सामने व्रत और पूजा का संकल्प लें।

4. फिर वेदोक्त मंत्रों से मत्स्य रूपी भगवान विष्णुजी का पूजन करें।

5. पूजा करने के बाद ब्राह्मणों को भोजन करवाएं और श्रद्धा अनुसार दान करें।

मत्स्य जयंती

- डॉ.गाजुला.शेकषावली

6. फल-फूल और मिठाई का भोग लगाएं। अंत में मत्स्य पुराण का पाठ करें और भगवान विष्णु की आरती करके सभी को प्रसाद बांटें और स्वयं भी ग्रहण करें।

मत्स्य अवतार की पौराणिक कथा

कल्पांत के पूर्व एक पुण्यात्मा राजा तप कर रहा था। राजा का नाम सत्यव्रत था। सत्यव्रत पुण्यात्मा तो था ही, बडे उदार हृदय का भी था। प्रभात का समय था। सूर्योदय हो चुका था। सत्यव्रत कृतमाला नदी में स्नान कर रहा था। उसने स्नान करने के पश्चात् जब तर्पण के लिए अंजलि में जल लिया, तो अंजलि में जल के साथ एक छोटी-सी मछली भी आ गई। जैसे ही सत्यव्रत ने मछली को नदी के जल में छोडना चाहा मछली बोली, ''राजन! जल के बडे-बडे जीव छोटे-छोटे जीवों को मारकर खा जाते हैं। अवश्य कोई बडा जीव मुझे भी मारकर खा जायेगा। कृपा करके मेंरे प्राणों की रक्षा कीजिए।'' सत्यव्रत के हृहय में दया उत्पन्न हो उठी। उसने मछली को जल से भरे हुए अपने कमंडलु में डाल लिया। एक रात में मछली का शरीर इतना बढ गया कि कमंडलु उसके रहने के लिए छोटा पडने लगा। इसी तरह राजा जिस भी पात्र में उस मछली को रखते वही छोटा हो जाता और मछली का आकार बढता जाता। तब सत्यव्रत ने मछली को निकालकर एक बडा बर्तन में रखा लेकिन वही छोटा हो जाता है। तब सरोवर में डाल

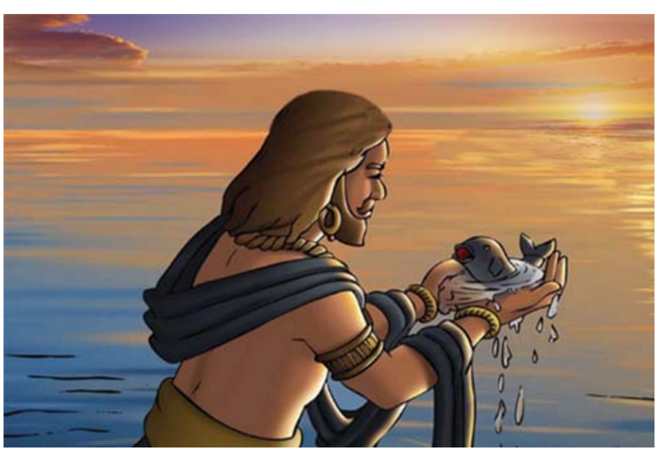

दिया, किंतु सरोवर भी मछली के लिए छोटा पड गया। उसके बाद सत्यव्रत ने मछली को नदी में और फिर समुद्र में डाल दिया।

आश्चर्य! समुद्र में भी मछली का शरीर इतना अधिक बढ़ गया कि मछली के रहने के लिए वह भी छोटा पड़ गया। अतः मछली पुनः सत्यव्रत से बोली, ''राजन! यह समुद्र भी मेरे रहने के लिए उपयुक्त नहीं है। मेरे रहने की व्यवस्था कहीं और कीजिए।'' सत्यव्रत विस्मित हो उठा। उसने आज तक ऐसी मछली कभी नहीं देखी थी। वह विस्मय-भरे स्वर में बोला, ''मेरी बुद्धि को विस्मय के सागर में डुबो देने वाले आप कौन हैं? आपका शरीर जिस गति से प्रतिदिन बढ़ता है, उसे दृष्टि में रखते हुए बिना किसी संदेह के कहा जा सकता है कि आप अवश्य परमात्मा हैं। यदि यह बात सत्य है, तो कृपा करके बताइये की आपने मत्स्य का रूप क्यों धारण किया है?'' सचमुच, वह भगवान श्रीहरि ही थे। मत्स्य रूपधारी श्रीहरि ने उत्तर दिया, ''राजन! एक दैत्य ने वेदों को चुरा लिया है। जगत् में चारों ओर अज्ञान और अधर्म का अंधकार फैला हुआ है। मैंने हयग्रीव को मारने के लिए ही मत्स्य का रूप धारण किया है। आज से सातवें दिन सारी पृथ्वी पानी में डूब जाएगी। जल के अतिरिक्त कहीं कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होगा। आपके पास एक नाव पहुँचेगी, आप सभी अनाजों और औषधियों के बीजों को लेकर सप्तऋषियों के साथ नाव पर बैठ जाइयेगा। मैं उसी समय आपको पुनः दिखाई दूँगा और आपको आत्मतत्त्व का ज्ञान प्रदान करूँगा।''

पृथ्वी पर जल प्रलय

सत्यव्रत उसी दिन से हरि का स्मरण करते हुए प्रलय की प्रतीक्षा करने लगे। सातवें दिन प्रलय का दृश्य उपस्थित हो उठा। वर्षा उमड़कर अपनी सीमा से बाहर बहने लगा। भयानक वृष्टि होने लगी। थोड़ी ही देर में

जल ही जल हो गया। संपूर्ण पृथ्वी जल में समा गई। उसी समय एक नाव दिखाई पड़ी। सत्यव्रत सप्तऋषियों के साथ उस नाव पर बैठ गए, उन्होंने नाव के ऊपर संपूर्ण अनाजों और औषधियों के बीज भी भर लिए। नाव प्रलय के सागर में तैरने लगी।

प्रलय के उस सागर में उस नाव के अतिरिक्त कहीं भी कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। सहसा मत्स्यरूपी भगवान प्रलय के सागर में दिखाई पड़े। सत्यव्रत और सप्तर्षिगण मत्स्य रूपी भगवान की प्रार्थना करने लगे, ''हे प्रभो! आप ही सृष्टि के आदि हैं, आप ही पालक है और आप ही रक्षक हैं। दया करके हमें अपनी शरण में लीजिए, हमारी रक्षा कीजिए।''

सत्यव्रत और सप्तऋषियों की प्रार्थना से मत्स्यरूपी भगवान प्रसन्न हो उठे। उन्होंने अपने वचन के अनुसार सत्यव्रत को आत्मज्ञान प्रदान किया और बताया, ''सभी प्राणियों में मैं ही निवास करता हूँ। न कोई ऊंच है, न नीच। सभी प्राणी एक समान हैं। जगत् नश्वर है। नश्वर जगत् में मेरे अतिरिक्त कहीं कुछ भी नहीं है। जो प्राणी मुझे सबमें देखता हुआ जीवन व्यतीत करता है, वह अंत में मुझमें ही मिल जाता है।'' मत्स्य रूपी भगवान से आत्मज्ञान पाकर सत्यव्रत का जीवन धन्य हो उठा।

वे जीते जी ही जीवन मुक्त हो गए। प्रलय का प्रकोप शांत होने पर मत्स्य रूपी भगवान ने उस दैत्य को मारकर, उससे वेद छीन लिए। भगवान ने ब्रह्माजी को पुनः वेद दे दिए।

तिरुपति पुण्य क्षेत्र में स्थित श्री वेदनारायण स्वामी (मत्स्यावतार) का मंदिर

दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले से 70 किलोमीटर के दूरी पर स्थित नागुलापुरम नामक गाँव में मत्स्यावतार का मंदिर है। पूरे भारत देश में यह एक ही ऐसा मंदिर है जो भगवान मत्स्य के अवतार में भक्तजनों को दर्शन दे रहे हैं। इस मंदिर के स्वामी को वेदनारायण स्वामी कहते हैं। इस मंदिर की विशेषता है कि हर वर्ष मार्च के समय में सूर्य किरण सीधे स्वामी की प्रतिमा को स्पर्श करते हैं। यह दृश्य अत्यंत मुग्धमनोहर लगता है।

मत्स्य अवतार का महत्व

पौराणिक कथा के अनुसार, सृष्टि के पालनहार भगवान विष्णु ने पुष्पभद्रा नदी के किनारे अपना पहला अवतार मत्स्य के रूप में लिया। वह एक विशाल मछली के रूप में थे, जिसके मुख पर एक बड़ी सींग थी। सृष्टि को प्रलय से बचाने के लिए एक विशाल नाव का निर्माण हुआ, जिसमें सभी जीव, जंतु, पशु, पक्षी, पेड़, पौधों को रखा गया। महाप्रलय के समय मत्स्य स्वरूप में भगवान विष्णु ने उस नाव की रक्षा की, जिससे सभी की जान बची और एक नया जीवन मिला।

श्री प्रपन्नामृतम्

(47वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

श्री यादवाद्रि की खोज एवं श्री सम्पत्कुमार भगवान की प्राप्ति

शिष्य समुदाय के साथ भक्तग्राम पूर्णाचार्य और राजा विष्णुवर्द्धन द्वारा पूजित यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने समस्त संसार का उज्जीवन करते हुये भक्तग्राम नामक स्थान पर कुछ समय के लिये निवास किया।

एक समय तिलक करने के लिये श्रीरंगम् से लाया हुआ तिलक (पासा) समाप्त होने को आया। अतः श्वेतमृत्तिका के अभाव में श्रीवैष्णव महात्मा लोग तिलक कैसे लगायेंगे? इस चिन्ता से श्रीस्वामीजी महाराज कुछ उद्विग्न हो रहे थे, तो प्रपन्नों के क्लेश हरने वाले भगवान श्री यादवाद्रिनाथ ने उनको स्वप्न में आदेश दिया कि- ''हे यतिराज! यादवाद्रि पर पर्याप्त मात्रा में तिलक पासा निर्माण के लिये शुद्ध श्वेत मृत्तिका उपलब्ध है। आप उक्त यादवाद्रि पर शीघ्र आइये। मैं भी यहीं पर नित्य निवास करूँगा। मुझे आप यहाँ की भूमि से बाहर निकालकर और मन्दिर निर्माण कराकर तब शीघ्र ही मेरी प्रतिष्ठा सम्पन्न कराइये।'' प्रातः जगकर यतिराज ने स्वप्न का समस्त वृत्तान्त अपने प्रिय शिष्यों एवं राजा विष्णुवर्द्धन से कहा और शीघ्र ही यादवाद्रि पर जाने का विचार प्रकट किया। तत्पश्चात् राजा विष्णुवर्द्धन के साथ आप यादवाद्रि के लिये प्रस्थित हो गये। राजा ने उस जंगल को कटवाकर सुन्दर मार्ग का निर्माण कराया। अपनी सेवा, कोष आदि के साथ यतिराज के साथ यादवाद्रि पर पहुँचा। बहुधान्य नामक सम्वत्सर के पुष्य मास में यतिराज वेदपुष्करिणी के समीप पहुँच गये और वहाँ पर उन्होंने परिधान शिला (स्नान करने के बाद संन्यासियों के लिये वस्त्र बदलने का प्रस्तर पीठ) देखी। तब आपने विधिपूर्वक उस शिला के ऊपर अपने वस्त्र उताकर स्नान किया और फिर दत्तात्रेय ऋषि ही तरह उस शिला पर खड़े होकर काषाय वस्त्र पहन लिये। इसके बाद स्वप्न में वर्णित यादवाद्रि भगवान श्री नारायण का अन्वेषण करने के लिये आपने समस्त पहाड़ का परिभ्रमण करना आरम्भ किया। एक दिन स्वप्न में उन्हें भगवान ने बताया कि इस पर्वत की उपत्यका में कल्याणी तीर्थ के दक्षिण तट पर जो चम्पा के वृक्षों का समूह है, उसके उत्तर में तुलसी के समीप वल्मीक के अन्दर मेरा निवास है, और वहीं पर एक समय में पक्षीराज गरुड़ ने श्वेतद्वीप से श्वेत मृत्तिका लाकर रखी थी, जो मेरी इच्छा से अक्षय बन गयी है। कल्याणी तीर्थ के उत्तर में शुद्ध श्वेतमृत्तिका पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

स्वप्न से जगकर उन्होंने सारा वृत्तान्त राजा से कहा और उनको साथ लेकर उस तुलसी के पास आये और प्रणाम किया। वहाँ यतिराज के द्वारा मिट्टी खोदने पर एक हजार बारह शताब्द में बहुधान्य नामक सम्वत्सर के पुष्य मास की चतुर्दशी को भगवान श्री यादवाद्रिनाथ प्रादुर्भूत हुये। उस समय में प्रभव नाम योग से युक्त पुनर्वसु नक्षत्र था। भगवान का प्रदुर्भाव हुआ जानकर लोग बड़ी प्रसन्नता के साथ वहाँ एकत्रित हुये और तुमुलध्वनि से भगवान की जय-जयकार करने लगे। उसी समय मृदंगादि वाद्यों की भी ध्वनि हुई। यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने राजा को भगवान के दर्शन कराये और तीन दिनों तक लगातार विधिवत् पूजा और दुग्धादि से अभिषेक किया। इसके बाद उत्तर दिशा में कल्याणी तीर्थ को गये और वहाँ उपत्यका पर त्रिदण्ड की जड़ का स्पर्श कर श्वेत मृत्तिका निकाली तथा उस मृत्तिका से स्वयं ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण किये। लोगों के द्वारा समस्त वन को उजड़वाकर श्री नारायणपुर नामक एक नगर बसाया, जिसमें गगनचुम्बी गोपुरों और मण्डपों से सुशोभित मन्दिर की स्थापना करायी। वहाँ सभी जाति के मनुष्यों के हेतु आवास बनवाये गये। भगवान के नित्योत्सव कार्य के लिये नारदपांचरात्र की विधि से तथा ईश्वर-सात्वत् संहिता के अनुसार श्रीरंगराज भट्टर तथा श्रीराजभट्टर के द्वारा सम्प्रोक्षण करवाकर यतिराज ने यदुशैलनाथ को प्रतिष्ठित किया। फिर उत्सवमूर्ति की प्राप्ति के लिये भगवान का ध्यान करते हुये सो गये। रात्रि में भगवान ने स्वप्न दिया कि मेरी उत्सवमूर्ति जो 'राम-प्रिय' के नाम से प्रख्यात है।

इस समय दिल्लीनरेश के राजभवन में रखी हुई है। वहाँ जाकर आप उसे ले आइयें। स्वप्न से जगकर प्रसन्न हृदय यतिराज ने सारा वृत्तान्त राजा विष्णुवर्द्धन को सुनाया। जिसको सुनकर वह बोला कि- ''महाराज! आप सर्व समर्थ है। साक्षात् नारायण के स्वरूप एवं समस्त जगत के ज्ञाता और आचार्य हैं। परमहंस स्वरूप। आपके लिये जगत के सभी कार्य साध्य हैं। अतः यदि आप दिल्ली जायें तो दिल्लीश्वर निश्चय ही आपके तपोबल से प्रभावित होकर भगवान की मूर्ति आपको समर्पित कर देगा। मार्ग के लिये जितने अर्थ एवं साधन सामग्री की आवश्यकता हो वह निःसंकोच लेकर शीघ्र प्रस्थान करने की कृपा करें। मेरा समस्त ऐश्वर्य आपके चरणों में समर्पित है।'' यह कहकर राजा ने पर्याप्त द्रव्य यतिराज के चरणों में समर्पित कर दिया। तत्पश्चात् यतिराज असंख्य शिष्य समुदाय के साथ भगवान श्रीरामप्रिय को लिवाकर लाने के लिये शीघ्र ही वहाँ से शुभ मुहूर्त में प्रस्थान करके दिल्ली की ओर चल पड़े। भव्य ऊर्ध्वपुण्ड्र, तिलक, कमलाक्ष एवं तुलसी की माला आदि से विभूषित पवित्र काषाय वस्त्र और सिर पर साफा वाले यतिराज के हजारों शिष्य उनके चरित्र की गाथायें सुनाते हुये एवं पंचघाटी का पाठ करने वाले सहस्रों शिष्यों एवं सैनिकों के साथ दिल्ली* पहुँचे।

यतिराज की विशाल श्रीवैष्णव मंडली को देखकर दिल्लीश्वर को अत्यन्त विस्मय हुआ, और उसने यथायोग्य सत्कार के साथ प्रेम पूर्वक यतिराज के आगमन का कारण जानना चाहा। शिष्यों के द्वारा आपने दिल्लीश्वर को अपने आने का कारण बताया। जिसको सुनकर वह बहुत हर्षित हुआ एवं राजकीय वैभव के साथ यतिराज का स्वागत सत्कार करके यतिराज के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया, और कहा कि कृपया मेरे योग्य सेवा बतलाइये।'' तब यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने कहा कि- ''भगवान् के स्वप्नानुसार आपके राजमहल में हमारे आराध्यदेव श्रीरामप्रिय भगवान् की मूर्ति विद्यमान है। उस मूर्ति को ले

---

* दिल्ली, यह स्थान वर्तमान दिल्ली नहीं अपितु दूसरा ही इस नाम का कोई नगर तत्कालीन समय में कहीं स्थित था। क्योंकि यतिराज श्री रामानुजाचार्य का समकालीन दिल्ली का कोई यवन बादशाह नहीं हुआ है, जिसके पास ''रामप्रिय-मूर्ति'' रही हो।

जाकर हम यादवाद्रि पर प्रतिष्ठित करना चाहते है। अतः वह मूर्ति हमें दी जाये।'' बादशाह ने अपने महल में रखी हुई बहुत सी मूर्तियाँ दिखाई, लेकिन उनमें एकभी मूर्ति ऐसी नहीं दिखलाई पड़ी जो श्रीरामप्रिय भगवान की हो। तब यतिराज ने और मूर्तियों दिखलाने को कहा तो बादशाह ने कहा कि यदि रामप्रिय आपके आराध्य देव है तो फिर वे आपके बुलाने पर स्वयमेव यहाँ क्यों नहीं आ जाते।

यह सुनकर यतिराज निरुत्तर हो गये और किंचित लज्ञित होकर राजमहल से बाहर आ गये। उसी रात में भगवान ने स्वप्न में उनसे कहा कि-यतिराज आप व्यर्थ में क्यों चिन्ता कर रहे है। मैं यहाँ राजमहल में राजकन्या के परम आराध्य देव के रूप में पूजित होकर उसके ही निवास स्थान में स्थित हूँ। यतिराज ने प्रातःकाल सब वृत्तान्त बादशाह को कहलाया तो उसको बडा विस्मय हुआ और उसने आपको राजकन्या के निवास स्थान पर पहुँचा दिया यहाँ आपने देखा कि पिताम्बरधारी, कस्तूरी के तिलक से विभूषित अवस्था तथा रूप का वर्णन न हो सके ऐसे दिव्य आभूषणों से अलंकृत और सुन्दर मुखारविन्द वाले भगवान, श्रीरामप्रिय आपके सामने स्थित हास्यमयी सुन्दर मुद्रा में चले आ रहे है।

आपके द्वारा ''चल्वपिल्ली'' सम्पत्कुमार इस प्रिय शब्द को सुनकर प्रेम सागर में गोता लगाते हुये उस राजकन्या के शयन गृह का त्याग करके भगवान् यतिराज की गोद में विराजमान हो गये। ''यह मेरे सम्पत पुत्र है'' कहकर आपने प्रेमपूर्वक सम्पत् का आलिंगन किया और उसी दिन से भगवान् का नाम श्री सम्पत्कुमार प्रसिद्ध हो गया। यतिराज भगवान् को अपना पुत्र मानकर बारम्बार उनका आलिंगन करने लगे। उस आश्चर्यजनक घटना को देखकर दिल्लीश्वर एवं सभी लोगों को अत्यन्त आश्चर्य हुआ और सभी ने यतिराज को महान अलौकिक महापुरुष मानकर उनके चरणों में प्रणाम किया।

दिल्ली नरेण से सत्कृत होकर जब यतिराज यहाँ से प्रस्थान करने का उपक्रम करने लगे तो अपने आराध्य देव के वियोग में दुःखित राजकन्या को बडा संताप हुआ, और जब यह समाचार उनकी सखियों के द्वारा बादशाह ने सुना तो अपनी कन्या के लिये रोते हुये वह यतिराज से बोला कि- ''महाराज मेरी पुत्री! इस मूर्ति के बिना जीवित नहीं रह सकती। उसकी जान बचाने के लिये मुझे यह वापस कर दीजिये। इसके वियोग में राजकन्या अत्यन्त दुःखित है।''

तब यतिराज ने उससे कहा कि - ''पहले अपने वचनों का स्मरण करो। आपने कहा था कि यदि रामप्रिय आपके देवता हैं तो वह स्वयमेव चलकर आपके समीप में क्यों नहीं आ जाते। इसी के अनुसार हमारे देवता पास चलकर आ गये। इस स्थिति में अब हम आपको यह वापस नहीं करेंगे। ''यतिराज के वचनों को सुनकर युक्तिहीन बादशाह लज्ञित हो गया और अपने मन्त्रियों से सलाह करके अपनी वियोगिन पुत्री को भी उनके साथ भेजने का निश्चय कर लिया, इसके अनुसार उसने श्री रामप्रिय भगवान् को पालकी में विराजमान करके और उसी में अपनी पुत्री को भी बैठाकर उपहार में बहुत सा धन, आभूषण, वस्त्रादि देकर यतिराज श्री रामानुजाचार्य के साथ प्रिय सहित ''रामाप्रिय'' को विदाई दी। उनके सम्मान के लिये अपने पुत्र को चतुरंगिणि सेना देकर साथ में भेज दिया।

इस प्रकार - जैसे लंका विजय के पश्चात भगवान् श्रीराम ने अयोध्या के लिये प्रस्थान किया था, वैसे ही यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने भगवान सम्पत्कुमार, उनकी प्रिया राजकन्या, चतुरंगिणी सेना, श्रीवैष्णव मण्डली और दिल्लीश राजकुमार के साथ श्री यादवाद्रि के लिये प्रस्थान किया।

।।श्री प्रपन्नामृत का 47वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

दि. 16-02-2024 को तिरुमल में रथसप्तमी के अवसर पर सात वाहनों पर श्री मलयप्पस्वामीजी आरूढ़ होकर माडावीथियों में भक्तों को दर्शन दिया था।

दि. 01-03-2024 से दि. 10-03-2024 तक तिरुपति,
श्री कपिलेश्वर स्वामीजी का ब्रह्मोत्सव अत्यंत वैभवोपेत ढंग से संपन्न किया।
इस संदर्भ में भगवान श्री कपिलेश्वर स्वामीजी, माता श्री कामाक्षीदेवी ने
विविध वाहनों पर आरूढ़ होकर पुरवीथियों में भक्तगणों को दर्शन दिया।

दि. 29-02-2024 से दि. 08-03-2024 तक श्रीनिवासमंगापुरम्, श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी का ब्रह्मोत्सव अत्यंत धूम-धाम से संपन्न किया। इस अवसर पर स्वामीजी विविध वाहनों पर आरूढ़ होकर पुरवीथियों में भक्तगण को दर्शन दिया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. ने भाग लिया।

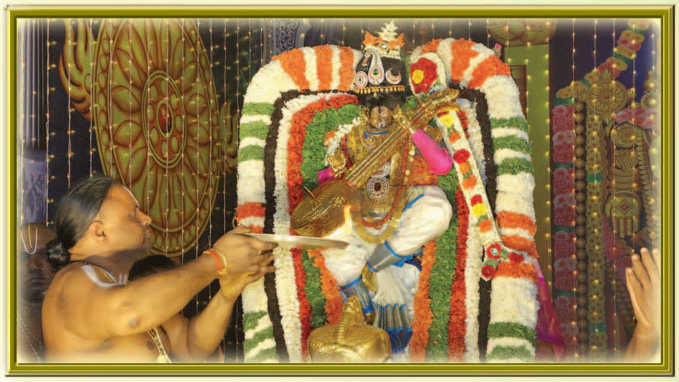

दि. 17-02-2024 से दि. 23-02-2024 तक
तिरुपति, श्री गोविंदराज स्वामीजी का प्लवोत्सव
अत्यंत वैभवोपेत ढंग से संपन्न किया।

दि. 08-02-2024 से दि. 10-02-2024 तक
तिरुमल में तीन दिनों का श्री पुरंदरदासजी का
आराधन महोत्सव अत्यंत वैभव से संपन्न किया।

दि. 09-03-2024 को तिरुपति,
श्री कपिलेश्वर स्वामीजी का कल्याणोत्सव
वैभवोपेत ढंग से संपन्न किया।

दि. 10-03-2024 को आं.प्र. में स्थित
श्रीकालहस्तीश्वर स्वामीजी का कल्याणोत्सव के
अवसर पर ति.ति.दे. की ओर से
पवित्र रेशमी वस्त्रों को ति.ति.दे. के ई.ओ.
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस. ने समर्पित किया।

दि. 04-03-2024 को आं.प्र. में स्थित
श्रीशैलम् श्री मल्लिकार्जुन स्वामीजी का शिवरात्रि
ब्रह्मोत्सव के अवसर पर ति.ति.दे. की ओर से
पवित्र रेशमी वस्त्रों को ति.ति.दे. के ई.ओ.
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस. ने समर्पित किया।

(गतांक से)

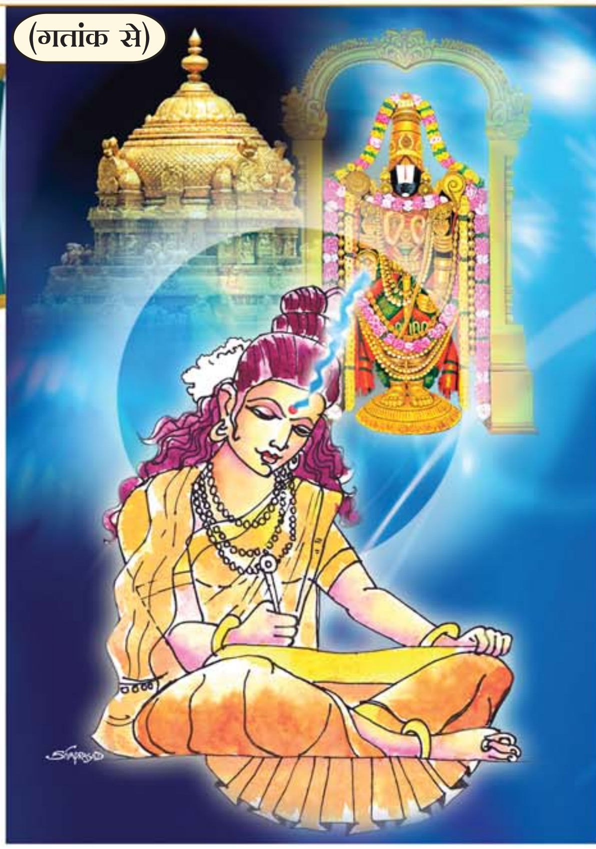

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तृतीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

4. प्राणायाम :

प्राण वायु को रेचन करके, चंद्रादि नाडी से पूरा करके यथाशक्ति रोक कर वापस सूर्य नाडी के द्वारा धीरे- धीरे छोडते, फिर प्राण वायु को सूर्य नाडी के द्वारा उदर भाग को पूरा करके, शास्त्र प्रकार से कुंभक करके, वापस चंद्र नाडी के द्वारा छोडना चाहिए। जिस मार्ग से वायु को छोडते हैं उसी मार्ग से वायु को भरना चाहिए। पहले मार्ग से दूसरे मार्ग को करते समय शीघ्र न करके धीरे-धीरे ही वायु को छोडना चाहिए। इस क्रम से सूर्य चंद्र नाडियों से वायु को यथाशक्ति छोड कर, यथाशक्ति भर कर, यथाशक्ति रोकना चाहिए। इस क्रम से करनेवाले रेचक, पूरक और कुंभक त्रय को करना ही प्राणायाम है।

प्रातःकाल, दोपहर, सायंकाल और रात को एक एक बार बीस कुंभक को धीरे धीरे अस्सी बार प्रति दिन करना चाहिए। तब प्राण निरोध करने पर पसीना होने से कनिष्ठ, कंपन पैदा होगा तो मध्यम, बार बार पद्मासन के हिलने से उत्तम प्राणायाम माना जाता है। अभ्यास के समय निकलनेवाला पसीने का मर्धन करने से शरीर दृढ बनेगा। इस प्राणायाम से तीन महीनों के बाद नाडी शुद्धि होती है। आगे प्रत्याहार क्या है? बताऊंगा।

5. प्रत्याहार :

श्री गुरुबोध विशेषता रखनेवाली बुद्धि के सहारे मन को सुस्थिर करके, मन में इंद्रियों को व्याप्त न होने देते, मन को निश्चल रखकर, बुरे विचारों को खेती के अन्न को पेट में छिपे रखने की तरह सारे विषय वासनाओं को पकड कर रोकना प्रत्याहार है। दान करनेवाली देह ही सुस्थिर होगी। ऐसी देह में ही दीपित होकर एकाग्र दृष्टि स्थिर होगी। इसलिए पहले इस में सफल होने के बाद ही ध्यान योग की साधना करनी चाहिए। वह कैसा है? सुनो।

6. ध्यान योग :

रोष, दुर्भाव, वैकल्य दोष, कपट, धोखा-दडी छोडकर, गर्व को कुचलकर, सद्गुरु की सूक्तियों को सुनते हुए, शांत होते, सदा झूठ बोलना छोड कर, सर्वेंद्रीय को निग्रह करके, गुरु के द्वारा आज्ञा किए गए लक्ष्यों को भूले बिना मन में रखते हुए, दूसरों की चिंता न करके,

चित्त को चपलता के शिकार न होने दे कर, अरिषड्वर्ग को त्याग करके, अंदर कभी भी विचलित न होने वाली बुद्धि प्रदान करना ही ध्यान योग का लक्ष्य है। इस में सफल होना ही ध्यान योग है। आगे धारणायोग क्या है? तो सुनो।

7. धारणायोग :

चरणों से लेकर घुटनों तक पृथ्वी तत्व ही है। उस के देव ब्रह्म को आकारयुक्त वायुधारण के अभ्यास के द्वारा ध्यान करने से पृथ्वी पर जय प्राप्त होगी। घुटनों से लेकर नाभी तक जलतत्व है। उस के देव विष्णु को आकार युक्त वायु धारण के अभ्यास के द्वारा ध्यान करने से जल पर विजय प्राप्त होगी। नाभी से हृदय तक अग्नि तत्व है। उस के देव रुद्र को अव्यक्त वर्ण आकार युक्त वायु धारण के अभ्यास के द्वारा ध्यान करने से अग्नि पर विजय प्राप्त होगी। हृदय से कंठ तक वायु तत्व है। उस के देव महेश्वर का आकार युक्त वायु धारण करके अभ्यास के द्वारा ध्यान करने से वायु पर विजय प्राप्त होगी। कंठ से लेकर ब्रह्मरंध्र तक आकाश तत्व है। उस के देव बिंदुमय गगन शरीरवाले सदाशिव का आकार युक्त वायु धारण करके अभ्यास के द्वारा ध्यान करने से आकाश पर जय प्राप्त होगी। इस प्रकार से धरणी, जल, अग्नि, वायु, आकाश आदि पंच धारणा के अभ्यास से पंचभूतों पर विजय प्राप्त होगी।

ध्यान का अभ्यास करने से मन वश में होगा। चित्त भी एकाग्र होगा। बुद्धि के स्थिर होने से आनंद की पूर्ति होगी। अवनि में योग गुरु इसी को धारणा योग कहते हैं। समाधि योग कौन सा है? तो सुनो।

8. समाधि योग :

आसन की सफलता से, कुंभक सिद्धि के द्वारा निर्मल बने ज्ञान प्रकाश से मायांधकार को कुचल कर मानस-आत्मा के आकाश में तन्मयत्व और शांति को प्राप्त करके, संयोग-वियोग, सुख-दुखों को भुलाने से ब्रह्म-पद प्राप्त करने का भाव पैदा होगा। तब निश्चल आनंद के स्वानुभव का बोध ही समाधि स्थिति है। इस अष्टांग योग अभ्यास करनेवालों को यह समाधि ही फलप्रद है। ऐसे लोग ब्रह्म पद को प्राप्त करेंगे। यही स्थूल रूप से अष्टांग योग है। इनसे अलग मंत्र, लय, हठ, राजयोग भी हैं। कहनेवाले श्री वराहस्वामी को नमस्कार करके भूदेवी ने इस रूप में कहा। ''हे देव! अष्टांगयोग के बारे में नहीं जानती थी। अब आप से उन के बारे में सुन लिया। अब मुझ पर दया करते हुए सुंदर मंत्र, लय, हठ और राजयोग के बारे में बताइए।'' तब श्री श्वेतवराह स्वामी ने भूदेवी की ओर देखकर इस रूप में कहा। ''मंत्रयोग के बारे में बताऊंगा। सुनो!''

मंत्र योग विधान - सप्त कमल :

मंत्र योग का संकल्प करके विसर्जन अंग के समीप रहनेवाले आधार कमल में व श ष स दलों पर दीपित होते गणेश वहाँ प्रकाशित होते रहते हैं। उस के दो अंगुल ऊपर उत्पत्ति के रूप में स्वादिष्ठान में ब भ म य र ल आकार में सोलह दलों पर कुंडलिनी उत्पत्ति का आद्य बनती है। उस के ऊपर आठ अंगुल के ऊपर आदि वर्णावली के साथ मिलकर दस दलों पर मणिपूरक नाडी रहती है। वहाँ विष्णु स्थिति कर्ता बन कर रहते हैं। फिर

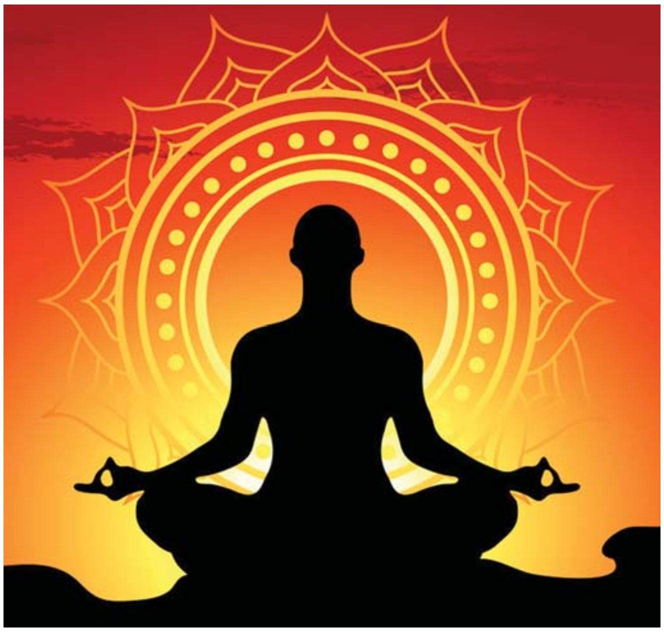

दस अंगुल के ऊपर हृदय के समीप अनाहत पद्म रहता है। वह ठांत वर्ण में बारह दलों पर अधिनायक लयकार रुद्र रहते हैं। उस के बाद बारह अंगुलों के ऊपर विशुद्ध रूप में मानेजाने वाले कंठ के पास, अ आ सोलह दलों में दीपित होनेवाले सदाशिव वहाँ रहते हैं। उस के ऊपर नाज्ञाभिधान चक्र में ह आकार रहता है। वहाँ अतिकोमल परमात्मा रहता है।

उस के ऊपर सहस्रार कमल शीर्ष के पास दीपित रहता है। यह अमृत स्थान है। देह वृक्ष के लिए वह मूल है। वहाँ पर गुरु निवास रहता है। यहाँ पिंगल, एक विंशति सहस्रार और षट शत स्वास प्राणापान कलित होकर हंस के रूप में जजमान रहता है। ऐसी स्वास गणपति छे सौ, जलज-संभव, विष्णु और रुद्र के लिए छे सौ, सदाशिव, परमात्मा और गुरु को एक एक लिए एक हजार स्वास होती हैं। इस प्रकार सप्त कमलों पर बैठनेवाले हंसों का काल क्रम इस प्रकार है।

हंसों का काल प्रमाण :

आधार के पास छे हंसों के अर्पित होते समय एक एक घडी, दस विनाडियों के स्वाधिष्टान के पास छे हजार हंसों का अर्पित होते समय सोलह घडी, एक अर्ध घडी, दस विघडी, क्रम से मणिपूरक हजार हंसों के अर्पित होते समय सोलह अर्ध घडी, दस विघडी, अनाहत में छे हजार हंसों का अर्पित होते समय सोलह घडी, दस विघडी, प्रकट विशुद्ध में हजार हंसों का अर्पित होते समय दो घडी, एक अर्ध घडी, सोलह विघडी वहाँ तक हंस चार हो जाते, आज्ञा चक्र के पास सहस्र हंसों का समर्पित होते समय ढाई घडी, सोलह विघडी वहाँ तक हंस चार हो जाते, सहस्रार के पास सहस्र हंसों को समर्पित होते समय ढाई घडी, सोलह विघडी वहाँ तक हंस चार हो जाते। इस रूप में हर दिन सारे जनों को साठ घडी होते हैं।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक ध्रुवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – 517 507. चित्तूर जिला।

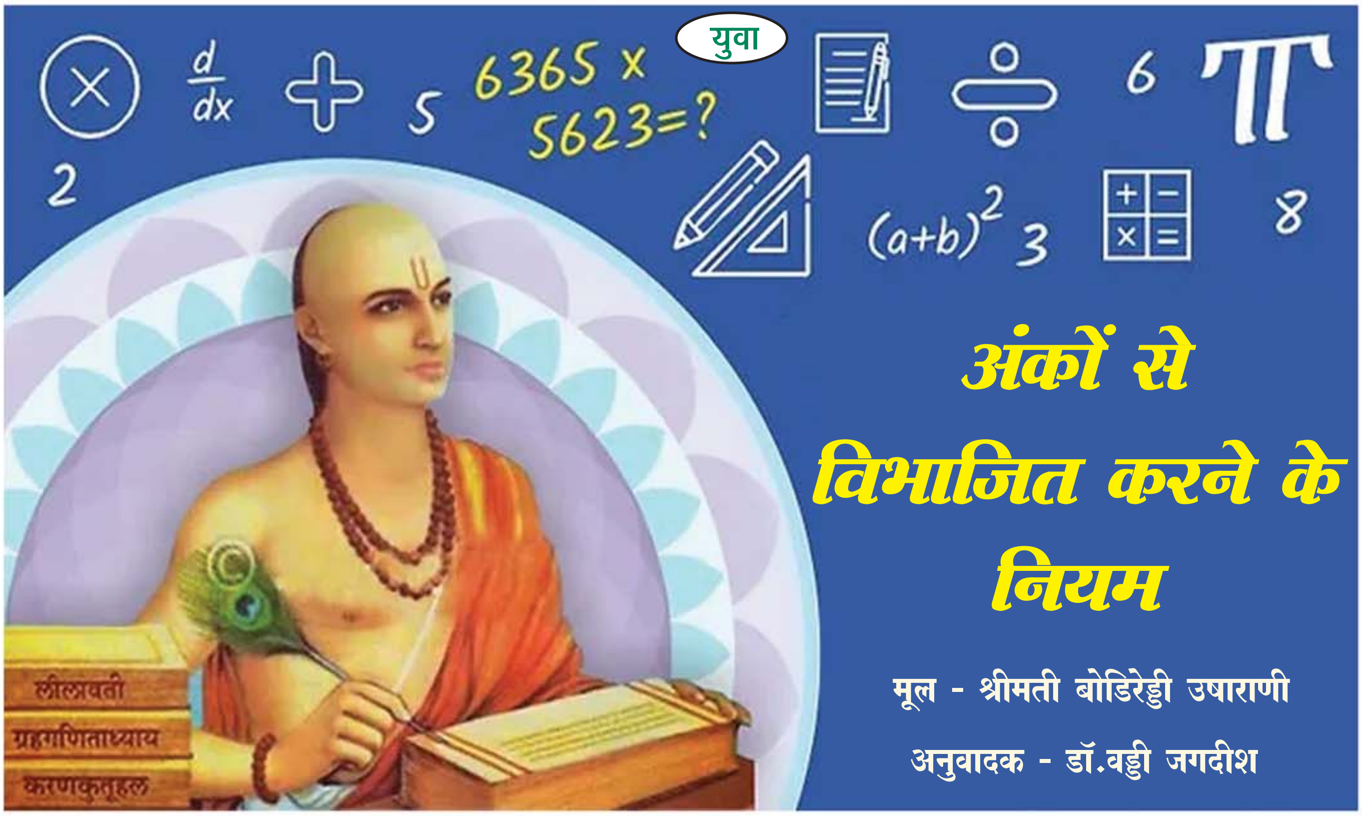

अंकों से विभाजित करने के नियम

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी
अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

नियम (1) : किसी एक संख्या '7' से विभाजित करने के लिए अंक के अंत में सम संख्या रहनी चाहिए।

उदा (1) : 430, 432, 436 आदि संख्या '2' से विभाजित किया जाते हैं।

नियम (2) : किसी एक संख्या '3' से विभाजित करने के लिए अंकों के कुल को '3' से विभाजित करवाना है।

उदा (1) : 27 को चाहिए तो... अंकों का कुल 9(2+7=9). '9' संख्या '3' से विभाजित किया जाता है। इसलिए 27... 3 से विभाजित होगा।

उदा (2) : 207 को चाहिए तो... अंकों का कुल 9(2+0+7). यह संख्या '3' से विभाजित होती है। इसलिए 207 संख्या '3' से विभाजित होती है।

नियम (3) : किसी एक संख्या '4' से विभाजित करवाने के लिए संख्या के अंत वाले अंक '4' से विभाजित होनी चाहिए। अथवा अंत के दो अंक '0' होना चाहिए।

उदा (1) : 728 को लीजिए। अंत के दो अंक 28 को '4' से विभाजित होती है। इसलिए 728 संख्या 4 से विभाजित होती है।

नियम (4) : किसी एक संख्या '5' से विभाजित करने के लिए अंतिम संख्या '5' या '0' होना चाहिए।

उदा (1) : मान लीजिए 305, यह संख्या 5 से विभाजित की जाती है। दूसरी संख्या 350 लीजिए और यह भी 5 से विभाजित होती है।

नियम (5) : किसी एक संख्या को '6' से विभाजित करवाने के लिए उसकी अंतिम संख्या सम संख्या होनी चाहिए। तथा अंकों का कुल 3 से विभाजित होनी चाहिए।

उदा (1) : मान लीजिए 216. यह संख्या सम संख्या है। और अंकों का कुल 2+1+6=9

यहाँ 9... 3 से विभाजित होनेवाली संख्या है। इसलिए 6 से विभाजित होती है।

उदा (2) : 296. यह एक सम संख्या है, अंकों का कुल 2+9+6=17 होता है।

यहाँ 17 संख्या 3 से विभाजित नहीं होती है। इसलिए 296 संख्या 6 से विभाजित नही होती।

नियम (6) : एक संख्या '7' से विभाजन करवाने के लिए दो अंकों वाली संख्या में प्रथम स्थान की संख्या को 5 से गुणा करके दशम स्थान की संख्या को मिलाने से आनेवाले फल को 7 से विभाजित कर के प्राप्त हुआ फल 7 से विभाजित होता है।

उदा (1) : 14 को 7 से विभाजित करने के लिए प्रथम स्थान की संख्या 4 को 5 से गुणा करके आनेवाले फल को 1 मिलाने से 21 आता है। तुरंत 1 को 5 से गुणा करके फल को 2 मिलाने से 7 आता है। इसलिए संख्या को 7 से विभाजित कर सकते है।

4X5+1=21

1X5+2=7

उदा (2) : 28 को 7 से विभाजित करने के लिए... 8 को 5 से गुणा करना है तब 40 आता है। इस को 2 मिलाने से 42 बनता है। फिर 2 को 5 से गुणा करके 4 को मिलाने से 14 आता है। यह 7 से विभाजित होता है। इसलिए 28, 7 से विभाजित की जाती है।

8X5+2=42

2X5+4=14

उदा (3) : 63 को 7 से विभाजित करने के लिए... 3 को 5 से गुणा करने से 15 होता है। इस को 6 मिलाने से 21 आता है। यह 7 से विभाजित की जाती है। इसलिए जो दिया गया अंक 7 से विभाजित होती है।

3X5+6=21

1X5+2=7

उदा (4) : 98 को 7 से विभाजित करने के लिए... 8X5+9=49. इस संख्या 7 से विभाजित की जाती है।

नियम (7) : तीन अंकों वाली संख्या '7' से विभाजित करने का नियम :-

तीन अंकों वाली संख्या 7 से विभाजित होती है या नहीं है पहले इस विषय पर जानकारी लेने के लिए प्रथम स्थान की संख्या को 5 से गुणना कर बाकी संख्या को मिलाना चाहिए।

उदा (1) : 112 को 7 से विभाजित करने के लिए पहले 2 को 5 से गुणना करना चाहिए। फिर 11 को मिलाना चाहिए तब 21 होता है। यह '7' से विभाजित होती है। इसलिए यहाँ जो दी गयी संख्या 7 से विभाजित होती है।

उदा (2) : 336 को '7' से विभाजित करने के लिए पहले '6' को 5 से गुणा करने से 30 आता है। इस को 33 मिलाने से 63 होता है। फिर इस 3 को 5 से गुणा करके 6 को मिलाना चाहिए। तब 21 आता है। इस संख्या 7 से विभाजित होती है।

6X5+33=30+33=63

3X5+6=15+6=21

नियम (8) : किसी एक संख्या 8 से विभाजित करने का नियम :

विधि : एक संख्या 8 से विभाजित करने के लिए संख्या की अंतिम 3 संख्याओं को 8 से विभाजित करना चाहिए।

उदा : 2368 को 8 से विभाजन करने के लिए इस में अंतिम 3 संख्याएँ 368 हैं। यह संख्या 8 से विभाजित होती है। इसलिए दी गयी संख्या 8 से विभाजित की जाती है।

नियम (9) : किसी एक संख्या '9' से विभाजन करने के लिए अंकों का कुल को 9 से विभाजन किया जाना चाहिए।

उदा (1) : 4131 को 9 से विभाजन करने के लिए...

पहले अंकों का कुल 4+1+3+1=9 होता है। यह 9 से विभाजित होती है। इसलिए दी गई संख्या '9' से विभाजित की जाती है।

उदा (2) : 83916 को 9 से विभाजन करने के लिए...

अंकों का कुल 8+3+9+1+6=27 होता है। यहाँ मिला हुआ फल को 27 को मिलाना चाहिए। तब 2+7=9 होता है। इसलिए दी गई संख्या 9 से विभाजित की जाती है।

नियम (10) : किसी एक संख्या 10 से विभाजन करने के लिए दी गई संख्या में अंत की संख्या '0' होनी चाहिए।

नियम (11) : किसी एक संख्या 11 से विभाजन करने के लिए अंकों का योग को 11 से विभाजित की जाती है तो उसे 11 से रखे गए अंकों के योग का अंतर या तो '0' होना चाहिए।

उदा (1) : 58432 लीजिए...

अंकों का कुल = 5+4+2=11

सम संख्याओं का कुल = 8+3=11

विभाज्य = 11-11=0

इसलिए दी गई 58432 संख्या 11 से विभाजित किया जाता है।

इस प्रकार कई नियमों को देख सकते है।

फरवरी-2024 महीने का क्विज-19 के समाधान

1) यशोदा, 2) तिरुमल देवी; चिन्नादेवी,

3) श्रीकृष्ण, 4) श्रीकृष्ण,

5) देवकी-वसुदेव,

6) गजेन्द्र पुष्करिणी,

7) मरकतवल्लि, 8) श्रीकर विमान,

9) zea mays Everta,

10) सरस्वतीबाई, 11) नथ,

12) सरस्वती देवी, 13) रथसप्तमी,

14) श्री महाविष्णु,

15) रथसप्तमी के दिन.

ऋषि-मुनि

अश्वत्थामा

-डॉ.जी.सुजाता

अश्वत्थामा महाभारत काल अर्थात द्वापरयुग में जन्मे थे। उनकी गिनती उस युग के श्रेष्ठ योद्धाओं में होती थी। अश्वत्थामा के पिता का नाम द्रोणाचार्य तथा माता का नाम कृपि था। कुरु वंश के राजगुरु कृपाचार्य के भानजे थे। इनके पिता द्रोणाचार्य ने भगवान शिव को प्रसन्न करने हेतु बहुत सालों तक घोर तपस्या की थी। वह भगवान शिव से एक ऐसे पुत्र का आशीर्वाद पाना चाहते थे जो भगवान शिव के ही समान शूरवीर हो। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने इन्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया।

कुछ समय पश्चात् माता कृपि ने एक सुन्दर तेजश्वी बालक को जन्म दिया। जन्म ग्रहण करते ही इनके कण्ठ से हिनहिनाने की सी ध्वनि हुई जिससे इनका नाम अश्वत्थामा पड़ा। जन्म से ही अश्वत्थामा के कपाल में, एक दिव्यमणि हुआ करती थी। जिसका नाम शिरोमणि रत्न है। इस देवमणि के कारण, उन्हें भूख, प्यास, थकान व अन्य मानवीय सीमाओं को लाँघने की क्षमता मिली थी। भगवान शिव से प्राप्त उस शक्तिशाली दिव्य मणि ने अश्वत्थामा को लगभग अजेय और अमर बना दिया था।

युद्ध के विशेषज्ञ, गुरु द्रोणाचार्य सादा जीवन जीते थे और बहुत ही थोड़े धन और संपत्ति के साथ अपने जीवन निर्वाह करते थे जिसके कारण अश्वत्थामा का बचपन मुश्किलों से भरा रहा। कई बार उनका परिवार उन्हें पीने के लिए दूध तक ना दे सका। अपने परिवार के लिए एक बेहतर भविष्य की कामना लिए गुरु द्रोण अपने पूर्व सहपाठी और मित्र द्रुपद की सहायता लेने के लिए पांचाल साम्राज गए। हालांकि द्रुपद ने वहाँ गुरु द्रोण की मित्रता का उपहास बनाते हुए उनकी मित्रता के दावे को ठुकरा दिया और उन्हें भिखारी कहकर अपमानित भी किया। इस घटना के बाद, और द्रोण की ऐसी दशा देखकर, कृपाचार्य ने गुरु द्रोण को हस्तिनापुर आने का आमंत्रण दिया। यहाँ आकर गुरु द्रोणाचार्य पांडवों और कौरवों के गुरु बन गए। अश्वत्थामा भी कौरवों और पांडवों के साथ युद्ध कला में प्रशिक्षण लेने लगे।

कुरुक्षेत्र के युद्ध में अश्वत्थामा की भूमिका

वह महाभारत युद्ध के योद्धाओं में से एक थे, एक महारथी हैं। उन्हें अनेक दिव्य अस्त्र प्राप्त हैं। अश्वत्थामा ने कौरवों के पक्ष से, पांडवों के विरुद्ध युद्ध किया था। उन्हें कौरवों की ओर से अंतिम सेनापति के रूप में नियुक्त किया गया था।

महाभारत के युद्ध में उन्होंने सक्रिय भाग लिया था। उन्होंने भीम-पुत्र घटोत्कच को परास्त किया तथा घटोत्कच पुत्र अंजनपर्वा का वध किया। उसके अतिरिक्त द्रुपदकुमार, शत्रुंजय, बलानीक, जयानीक, जयाश्व तथा राजा श्रुताहु को भी मार डाला था। उन्होंने कुंतीभोज के दस पुत्रों का वध किया।

महाभारत युद्ध में धोके से किये गये द्रोणाचार्य के वध के विषय में जानकर अश्वत्थामा का खून खौल उठा। पूर्वकाल में द्रोण ने नारायण को प्रसन्न करके नारायणास्त्र की प्राप्ति की थी। फिर अपने बेटे अश्वत्थामा को नारायणास्त्र प्रदान करके उन्होंने किसी पर सहसा उसका आघात करने को मना किया। अश्वत्थामा ने धृष्टद्युम्न को उसी अस्त्र से मारने का निश्चय

किया। धृष्टद्युम्न पर जब उन्होंने नारायणास्त्र का प्रयोग किया तब कृष्ण ने अपनी ओर के सब सैनिकों को रथ से उतर-कर हथियार डालने के लिए कहा क्योंकि यही एक मात्र उसके निराकरण का उपाय था।

भीम ने कृष्ण की बात नहीं मानी तो सबको छोड़कर नारायणास्त्र उसी के मस्तक पर प्रहार करने लगा। कृष्ण ने उसे बलात रथ से उतारकर नारायणास्त्र के प्रभाव को शांत किया। अश्वत्थामा ने आग्नेयास्त्र का प्रयोग किया किंतु श्रीकृष्ण तथा अर्जुन पर उसका प्रभाव नहीं हुआ, शेष समस्त सेना व्याकुल और घायल हो गयी। अश्वत्थामा बड़े असमंजस में पड़ गये, तभी व्यास ने प्रकट होकर उन्हें बताया कि श्रीकृष्ण साक्षात विष्णु हैं, जिन्होंने आराधना से शिव को प्रसन्न कर रखा है। उन्हीं के तप से महामुनि नर (अर्जुन) प्रकट हुए। अतः अर्जुन और कृष्ण साक्षात नरनारायण हैं। अश्वत्थामा ने मन ही मन शिव, नर और नारायण को नमस्कार किया और सेना सहित शिविर की ओर प्रस्थान किया।

दुशासन की भयानक मृत्यु के बाद अश्वत्थामा ने हस्तिनापुर के कल्याण को ध्यान में रखते हुए दुर्योधन को पांडवों के साथ शांति बनाने का सुझाव दिया। बाद में दुर्योधन भीम द्वारा बुरी तरह से पकड़ लिया जाता है और मृत्यु को प्राप्त होता है। जिसके उपरांत कौरवों के पक्ष में केवल तीन ही लोग बचतें हैं - अश्वत्थामा, कृपा और कृतवर्मा। अश्वत्थामा दुर्योधन की मृत्यु का बदला लेने की शपथ लेता है और दुर्योधन मरने से पूर्व उसे सेनापति के रूप में नियुक्त करता है।

पांडवों द्वारा गुरु द्रोण का वध

महाभारत के युद्ध के 10वें दिन, जब भीष्म पितामह रणभूमि में गिर जाते हैं, तब गुरु द्रोण को कौरवों की सेना का सेनापति घोषित किया जाता है। युद्ध में पिता-पुत्र की जोड़ी ने पांडवों की सेना को तहस-नहस कर दिया था। पांडव सेना को हतोत्साहित देख श्रीकृष्ण ने द्रोणाचार्य का वध करने के लिए युधिष्ठिर से कूटनीति का सहारा लेने को कहा।

श्रीकृष्ण यह बात अच्छे से जानते थे कि सशस्त्र गुरु द्रोण को हराना संभव नहीं, इसीलिए उन्होंने युधिष्ठिर और अन्य पांडवों को सुझाव दिया कि यदि युद्ध के मैदान पर यह घोषणा कर दी जाए, कि अश्वत्थामा मारा गया तो वह दुखी हो जाएंगी और इस अवसर का लाभ उठाकर उन्हें हराया जा सकता है। भीम से अश्वत्थामा नामक एक हाथी को मारने की योजना बनाई और युधिष्ठिर द्वारा घोषणा करवाई कि अश्वत्थामा मारा गया। अंततः योजना ने कार्य कर दिया और धृष्टद्युम्न ने दुखी द्रोणाचार्य का मस्तक काट दिया।

श्रीकृष्ण ने दिया श्राप

पिता की मृत्यु ने अश्वत्थामा को विचलित कर दिया। उन्होंने आचरण की सभी सीमाओं का उल्लंघन किया यहाँ तक कि उन्होंने दिव्यास्त्र का भी दुरुपयोग किया था। छुप कर वह पांडवों के शिविर में पहुँचा और नियमों के विरुद्ध घोर कालरात्रि में कृपाचार्य तथा कृतवर्मा की सहायता से पांडवों के शेष वीर महारथियों का वध डर डाला। अश्वत्थामा ने निद्राधिन धृष्टद्युम्न और पांडवों

को समझ के, द्रौपदी के पांच पुत्रों की हत्या कर दी। हत्या के पश्चात, वह प्रायश्चित करने महर्षि वेदव्यास के पास पहुँचे। जब उन्हें पता चला कि पांडव जीवित हैं। पांडवों की जगह, उन्होंने द्रौपदी के पुत्रों की हत्या कर दी है। पुत्रों के वध से शोकग्रस्त द्रौपदी विलाप करने लगी। द्रौपदी के विलाप को सुनकर अर्जुन उस नीच कर्म हत्यारे ब्राह्मण के मस्तक को विच्छेदित कर डालने को प्रतिज्ञाबद्ध हुआ और श्रीकृष्ण को सारथी बनाकर, गाण्डीव धनुष लेकर अर्जुन ने अश्वत्थामा का पीछा किया। अश्वत्थामा को कहीं भी सुरक्षा नहीं मिली तो अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया।

यह देखकर श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन को ब्रह्मास्त्र प्रयोग करने का आदेश दिया। लेकिन महर्षि व्यास ने दो घातक अस्त्रों को टकराने से रोक लिया। वे जानते थे कि ब्रह्मांड के लिए, यह कितना विनाशकारी होगा। इसलिए ऋषि व्यास ने अर्जुन और अश्वत्थामा को, अपने अस्त्र निष्क्रमण के लिए कहा। अर्जुन ने तो अस्त्र निष्क्रमण कर लिया। लेकिन अश्वत्थामा को अस्त्र निष्क्रमण करने की विधि का ज्ञान नहीं था। इसीलिए उन्होंने जानबूझकर, इसे उत्तरा के गर्भ की ओर निर्देशित किया था। जिसके गर्भ में अभिमन्यु का पुत्र था।

उन्होंने यह पांडव वंश को नष्ट करने के लिए किया था। लेकिन भगवान श्रीकृष्ण ने, उत्तरा के गर्भ में पल रहे बच्चे को, पुनः जीवनदान दिया। इसी तरह अश्वत्थामा का शेष प्रयास भी विफल हो गया।

अश्वत्थामा के द्वारा किए गए पापों के लिए, श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा को अपने माथे से मणि को निकालने का आदेश दिया। श्रीकृष्ण ने श्राप दिया कि जिस जगह वह मणि थी। उस जगह घाव होगा। जो सदा दुखता और रिसता रहेगा। यह घाव उसके द्वारा किए गए, पापों को हमेशा याद दिलाता रहेगा। कलियुग के अंत तक वे प्रेम, दया और मन की शांति की तलाश में इधर-उधर भटकता रहेगा।

यह श्राप मृत्यु से भी अधिक घातक सिद्धि हुआ। क्योंकि अश्वत्थामा जानते थे कि वह अमर हैं। कलियुग के अंत तक, उन्हें अपने पापों का बोझ ढोना पड़ेगा। जब भगवान कल्कि कलियुग के अंत में अवतरित होंगे। तब वे अश्वत्थामा को, इस श्राप से मुक्त करेंगे। तब वे भी मन्वंतर के सप्त ऋषि बनेंगे।

महाभारत में द्रोण पुत्र अश्वत्थामा एक ऐसा योद्धा था, जो अकेले के ही दम पर संपूर्ण युद्ध लड़ने की क्षमता रखता था। महाभारत युद्ध के बाद जीवित बचे 18 योद्धाओं में से एक अश्वत्थामा भी थे। अश्वत्थामा को संपूर्ण महाभारत के युद्ध में कोई हरा नहीं सका था। वे आज भी अपराजित और अमर हैं।

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में 108 बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

भारतीय संस्कृति में रामकथा का अपना विशिष्ट महत्व है। रामकथा का सबसे बड़ा वैशिष्ट्य यही है कि वह भारतवर्ष की यावत्-सांस्कृतिक धाराओं को जोड़ने वाली है। संपूर्ण भारतीय जनमानस, सभी वर्णों और वर्गों की जीवन-यात्रा हेतु एक आदर्श उपस्थित करने वाली अजस्र धारा है। रामकथा ऊँच-नीच, धनवान-गरीब, नर-नारी, शहरी-देहाती अर्थात् समस्त जनता के सभी अंग-उपांगों के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा का अजस्र स्रोत हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कहीं न कहीं रामकथा का कुछ अंश मात्र विद्यमान रहता है। रामकथा के कारण ही हमारी गौरवशाली संस्कृति का विश्व क्षितिज पर एक पृथक सम्मान है।

भारतीय संस्कृति त्यागमयी, तपोमयी है। उसमें प्रत्येक वर्ग विशेष के लिए अपने स्तर व स्थिति के अनुसार भोग को त्याज्य कर तपोमयी वृत्ति पर ज्ञान दिया गया है। राम की कथा त्याग-प्रधान है। वह व्यक्तिगत सुख एवं भोग पर कर्तव्योन्मुख लोकहित की प्रधानता का जीवनदर्श है। ऐसा जीवन, जिसमें कोटि-कोटि जीवनों की वाणी देने की शक्ति और वृत्ति है। यही राम कथा भारतीय संस्कृति का आधार-बिन्दु है।

भारतीय संस्कृति के मुख्य स्रोत वेद और उपनिषद् हैं। वेद-उपनिषद् मानव-मात्र के लिए उपादेय उपदेश हैं। रामकथा के अनेक बिन्दु वेद-शास्त्रों में वर्णित हैं। अब प्रश्न उठता है कि राम की गौरव-गाथा जन-जन में प्रेरणा का बिन्दु क्यों बनी हुई है? राम एक आदर्श थे। उनके जीवन ने प्रत्येक मानव-मात्र को प्रभावित किया है।

विश्व क्षितिज पर राम के जैसा आदर्शशील मनुष्य दूसरा देखने को नहीं मिलता। उनका भातृप्रेम, जनता के प्रति प्रीति, नारी के प्रति सद्भाव आदि हमारे सनातन संस्कृति के चिरंतन प्रतीक बन गए हैं।

यह हमारी संस्कृति की एक विशिष्ट देन और ऋषि-मुनियों के दिव्य ज्ञान चक्षुओं द्वारा प्रदत्त एक अद्भुत सत्य है कि वे मानव मात्र में ही बन्धुत्व के दर्शन नहीं करते, चेतन-अचेतन, प्राणी-पदार्थ मात्र में भी सिर्फ बन्धुत्व के ही नहीं, अपनी आत्मा के, यहाँ तक कि भगवान के दर्शन करते हैं। महाकवि तुलसी ने 'मानस' में लिखा है-

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बन्दऊँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि।।

सर्वतोन्मुखी भारतीय संस्कृति में प्राण स्वरूप राम नित्य-प्रतिष्ठित हैं। राम कथा जहाँ भारत का सत्य इतिहास है, वहीं ज्ञान-विज्ञान, मोक्ष, प्रेम, धर्म, नीति का सर्वांग सुन्दर शास्त्र है। इसी के द्वारा समाज के उच्चतम स्तर की आध्यात्मिक संस्कृति सामान्य स्तर तक में निर्बाध गति से अक्षुण्ण बनी हुई हैं।

रामकथा, प्रभुराम के महान् दिव्यरूप में सनातन भारत के नित्य सत्य, स्वप्रकाश आत्मपुरुष की ही सर्व चमत्कारी महिमा से मण्डित लीलामयी अभिव्यक्ति है। राम ने भारतीय जनमानस को सन्निकट से अपने मधुर-मनोहर दर्शन कराए हैं। रामकथा में प्रभु और मानव की, नर और नारायण की दूरी दूर होकर प्रभु के परिपूर्ण रूप-स्वरूप का सुन्दर परिचय प्राप्त होता है। जो मानव-मात्र के लिए भारतीय संस्कृति का एक आश्चर्यमय आविष्कार है। प्रभु राम ने मानव रूप में प्रकट होकर, मनुष्यों में उतरकर सम्पूर्ण भारत के हृदय पर नित्य प्रभुत्व की प्रतिष्ठा कर दी है। साथ ही समस्त भारतीय संस्कृति को अपने अध्यात्म भावों से अनुप्रमाणित कर दिया है। रामकथा इतनी विलक्षण रही है कि यह भारत की राष्ट्रीय सीमा के अंदर ही नहीं अपितु विश्व में भारतीय संस्कृति के रूप में अपना प्रभाव विस्तार का कार्य किया है। श्रीमद्भागवत में एक वर्णन आया है - 'यह आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, गृह-नक्षत्र, प्राणी, दसों दिशाएँ, वृक्ष-लता, नदी-समुद्र सभी श्रीहरि के शरीर है। सभी रूपों में भगवान् ही स्वयं प्रकाशित है, यह जानकर सभी को अनन्य भगवत् भाव से प्रमाण करें'।

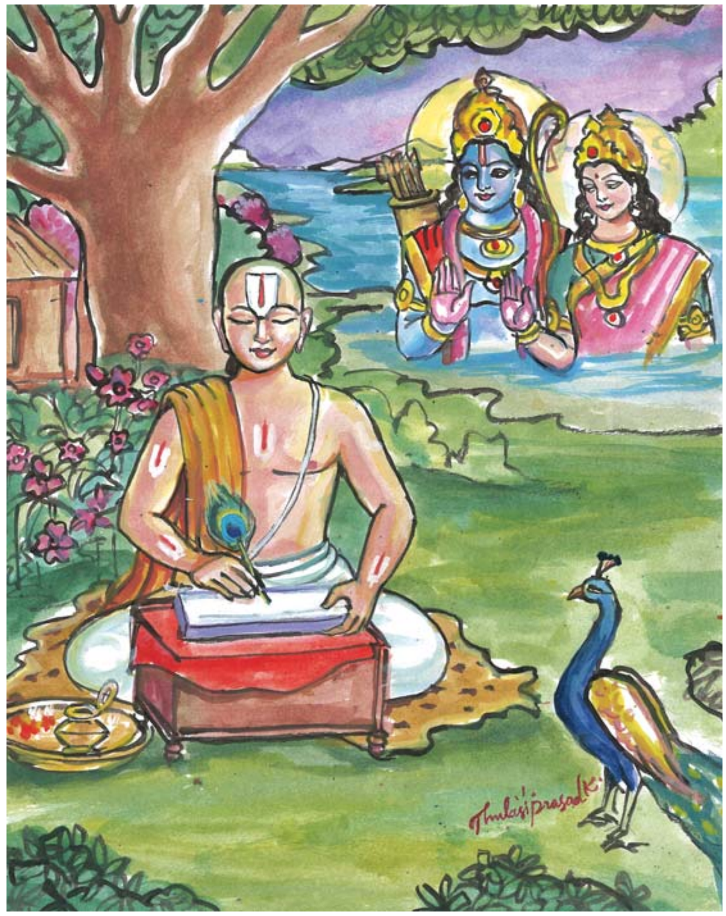

गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं -

'सीय राममय सब जग जानी।
करउ प्रनाम जोरि जुग पानी।।'

रामकथा मानवता की कथा है तथा रामकथा मानव चरित्र का आदर्श है। प्रत्येक मानव का कर्तव्य है कि वे अपना जीवन राम का जैसा निर्मित कर सुख-शांति और उन्नतिशील बनाएँ। रामकथा शांति और उन्नतिशील बनाएँ। रामकथा- 'चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्' है।

रामकथा में राम का चित्रण व गौरव-गाथा धर्म प्रधान है। राम अभयदाता, शरणागतवत्सल, सत्यनिष्ठा, शत्रुदमनकारी व धर्मज्ञ हैं। जो उनके गुणों का चिंतन-मनन करता है व सौभाग्यशाली होकर शांति लाभ करता है। उसका मानव-जन्म सार्थक हो जाता है। राजर्षि मनु के अनुसार, 'धैर्य, क्षमा, दम,

अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोधहीनता।' यह दस धर्म के लक्षण हैं। यह समस्त सद्गुण राम में सर्वदा विद्यमान रहते हैं। अतएव राम ही साक्षात् धर्म हैं। वाल्मीकि रामायण में भी राम की धर्मप्रियता का यथार्थ वर्णन पढ़ने को मिलता है। महाकवि तुलसीदास ने भी 'रामचरित मानस' में श्रीराम के उत्तम चरित्र का बखान-गान किया है।

त्रेतायुग में सूर्यवंशी चक्रवर्ती महाराजा दशरथ के पुत्र श्रीराम का आविर्भाव मानव जाति की अगणित समस्याओं एवं दिशा निर्देशों के साथ इसी भाव की पूर्ति का प्रयोजन बना।

राम अद्वितीय महापुरुष थे। वे अतुल बलशाली, सौन्दर्य निधान व उच्चशील के कर्मठ व्यक्ति थे। किशोरावस्था में ही उन्होंने धार्मिक अनुष्ठानों में रत विश्वामित्र मुनि के यज्ञ-रक्षा हेतु ताड़का-सुबाहु राक्षस का वध किया। महाराज विदेह की भरी स्वयंवर-सभा में शिवजी का विशाल धनुष को पल भर में तोड़ डाला था जिसके समक्ष बड़े-बड़े राजाओं को नतमस्तक होना पड़ा था। विवाह हो जाने के उपरान्त राजा ने उन्हें युवराज बनाना चाहा, परन्तु विमाता कैकेयी ने जब उन्हें 14 वर्ष का वनवास देने का वर राजा से मांगा तो विरोध में एक शब्द भी न कहकर वे तुरन्त वन जाने को तैयार हो गए। उन्होंने विमाता कैकेयी से कहा-

सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी।

जो पितु मातु वचन अनुरागी।

राजवैभव, बहुमूल्य वस्त्राभूषणों का परित्याग कर वे भाई लक्ष्मण व पत्नी सीता के साथ 14 वर्ष का वनवास जाने को तैयार हो गए, पिता और माताओं की सुख-सुविधा का ध्यान रखने की प्रार्थना पुरजनों और हित चिंतकों से कहा-

सोइ सब भांति मोर हितकारी।

जाते रह नर नाहु सुखारी।।

तथा -

मातु सकल मोरे विरह जेहिं न होंहि दुःख दीन।

सोइ उपाइ तुम्ह करेहु सब पुरजन परम प्रवीन।

राम वनवास का कष्ट सहकर भी भाइयों के प्रीति भाजन बने। यदि पिता की रुचि रखने के लिए घर पर रह जाते तो ही महाराज दशरथ स्वर्गवासी न होते। परन्तु भाइयों के मन-मस्तिष्क पर वैसा प्रभाव न पड़ता, जैसा वन जाने के बाद पड़ा।

श्रीराम के त्याग ने भ्रातृ-भक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया।

यह राम के त्याग का ही फल था कि चित्रकूट में राज्य कन्दुक की भांति भाइयों के पैर से ठुकराया गया दिखाई दिया। राम के त्याग ने भरत का हृदय जीत लिया तथा भरत के त्याग ने राम जी का संपूर्ण प्रेम प्राप्त कर लिया।

वन में ऋषि-मुनियों से मिलते हुए राम सदैव मर्यादा का ध्यान रखते हैं। वे परात्पर ब्रह्म होकर भी मुनियों को प्रथम प्रणाम करने से नहीं चूकते। वन में जाते हुए गंगा तट पर केवट जैसे निष्काम भक्त से भेंट करते हैं। वन में इन निवासियों को गले लगाकर राम मधुर सामाजिक जीवन का आदर्श स्थापित करते हैं। जो युगों उपेक्षित थे, वे ही रामजी के मित्र बने।

सामाजिक जीवन में सरसता लाने के लिए प्रेम और मैत्री का प्रमुख स्थान है। किष्किंधा में श्रीराम का सखा प्रेम स्तुत्य है। सुग्रीव से मित्रता होती है और मित्र के कष्ट को देख-सुनकर भी दुःखी न होने वाले को पातकी सिद्ध करते हैं।

राम अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सुग्रीव को किष्किंधा का राज्य सौंप देते हैं। लेकिन सुग्रीव भी सामान्य कमजोरियों के शिकार हुए बिना नहीं रहते वे राज्य-सुख में फंसकर कर्तव्य पथ से विचलित हो जाते हैं। जिसने निर्भय किया, उसी के कार्य-साधन में दीर्घसूत्रता। राम के नेत्रों में कुछ गरमी आती है वे लक्ष्मण को आज्ञा देते हैं -

'भय देखाई लै आवहु, तात सखा सुग्रीव।'

यद्यापि श्रीराम ने नरलीला की है, फिर भी उनके तात्विक स्वरूप को पहचानने वाले भक्ति की ब्रह्मभावना में कहीं पर भी हल्कापन नहीं आने पाया है।

शरणागत विभीषण पर राम की कृपा आज अनुकरण का विषय है। युद्ध भूमि में राम के पास भौतिकता से समृद्धता न होते देख विभीषण को शंका होती है। कैसे लंका पर यह विजय प्राप्त कर पायेंगे। विभीषण राम से प्रश्न करते हैं-

नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना।
केहि विधि जितब वीर बलवाना।।

इसके उत्तर में राम धर्ममय रथ का बड़ा ही सुन्दर चित्रण करते हैं, जिससे विजय पाना बड़ा ही सरल है। साथ ही युद्ध में राम का धैर्य एवं शौर्य परम अगाध दिखाई देता है। लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने के बाद का विलाप लोक संग्रह के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही सगुण लीला की विशेषता है। भ्रातृ प्रेम में पिता की आज्ञा को भी तोड़ने की बात वे कह देते हैं।

श्रीराम का राज्य शासन अत्यन्त लोकप्रिय था। प्रजा को प्रसन्न रखने में उनका समस्त जीवन बीत गया। राम राज्य की व्यवस्था महान् आदर्श है। उनके राज्य में किसी को कोई कष्ट न था। प्रजा सुखी थी। आज भी विश्व में जब कोई किसी राज्य की प्रशंसा करता है यह महान् आदर्श राज्य की बात करता है, तो वह ऊंची प्रशंसा में 'रामराज्य' से तुलना करने लगता है।

शास्त्र में जितने यज्ञ आते हैं श्रीराम ने सभी यज्ञों का विधिविधान अनुष्ठान किया। इसलिए आज भी भारतीय संस्कृति में रामकथा जन-जन की प्रेरण बिन्दु बनी हुई है। यह कथा प्रत्येक युग में अटल रहेगी। जैसा कि कहा गया है-

राम कथा जुग-जुग अटल, सब कोई भाखत नेत।
सुरग-बास रघुबर करा, सगरी पुरी समेत।।

(आयुर्वेद)

आम फलों का राजा

- डॉ.सुमा जोषि

आम दुनिया के विभिन्न हिस्सों में महत्वपूर्ण पौराणिक और सांस्कृतिक प्रतीकवाद रखता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ यह मूल रूप से उगाया जाता है या व्यापक रूप से खेती की जाती है, जैसे कि दक्षिण एशिया।

हिन्दु पौराणिक कथाओं में, आम के पेड को पवित्र माना जाता है और अक्सर इसे विभिन्न देवताओं से जोडा जाता है। ऐसा माना जाता है कि बुद्धि और समृद्धि के देवता, भगवान श्रीगणेशजी को यह पसन्द है। आम के पेड को विद्या और बुद्धि की देवी सरस्वती से भी जोडा जाता है और कहा जाता है कि आम के पेड लगानेवालों को वह अपना आशीर्वाद देती हैं।

आम का वैज्ञानिक नाम है :- Mangifera Indica और इसका Family (कुल) का नाम है Anacardiaceae आम का पेड एक उष्णकटिबन्धीय सदाबहार पेड है जो अपने स्वादिष्ट फल के लिए जाना जाता है। इसमें गहरे हरे, आयताकार-लांसोलेट पत्ते, पुष्पगुच्छों में छोटे सुगन्धित फूल और एक बडे बीज के साथ अण्डाकार या आयताकार ड्रूप फल होते हैं। घनी छतरी और खुरदरी, गहरे भूरे रंग की छालवाला पेड 40 मीटर तक ऊँचा हो सकता है। आम उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पनपते हैं, जिनमें विभिन्न किस्मों के फल अलग-अलग स्वाद, बनावट और रंग प्रदान करते हैं।

निम्न लिखित दुनिया भर में उपलब्ध आम की कई किस्मों के कुछ उदाहरण हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपना अनूठा स्वाद, बनावट और विशेषताएँ हैं। 1) Alphonso, 2) Kent, 3) Tommy Atkins, 4) Ataulfo (Honey Mango), 5) Keitt, Haden इत्यादि।

आयुर्वेद में, आम को ''आम्र'' के रूप में वर्णित किया गया है और इसे विभिन्न चिकित्सीय गुणों वाला एक अत्यधिक बेशकीमती फल माना जाता है।

स्वाद (रस) : आम स्वाद में मुख्य रूप से मीठे (मधुर) होते हैं, हालांकि उनकी परिपक्वता और विविधता के आधार पर उनमें हल्का खट्टा स्वाद हो सकता है। आम का शरीर पर ठण्डा प्रभाव पडता है और यह अपने मीठे स्वाद और ठण्डी प्रकृति के कारण पित्त दोष को शान्त करने के लिए जाना जाता है। अधिक मात्रा में खाया जाए तो कफ दोष को बढ़ा सकता है। आम में शीतल वीर्य या शक्ति होती है, जो शरीर में अतिरिक्त गर्मी को सन्तुलित करने में मदद करती है, जिससे वे गर्मी के महीनों के दौरान विशेष रूप से फायदेमन्द हो जाते हैं। आम पचने के बाद मीठा प्रभाव होता है, जिसका अर्थ है कि पचने के बाद, मीठा स्वाद होता है।

आम की पत्तियों के उपचारात्मक प्रयोग : माना जाता है कि आम के पत्तों से बना काढा पीने से रक्त शर्करा के स्तर को कम करने में मदद मिलती है। आम के पत्तों के काढ़े का उपयोग दस्त, पेचिश और कब्ज जैसी पाचन संबंधी समस्याओं को कम करने के लिए किया जाता है। पत्तियों में टैनिन होता है, जिसमें कसैले गुण होते हैं जो सूजन को कम करने और पाचन तंत्र में, श्लेष्म झिल्ली (mucous membrane) को कसने में मदद कर सकते हैं। आम के पत्तों में कफ निस्सारक गुण होते हैं जो बलगम को ढ़ीला करने और वायुमार्ग को साफ करने में मदद करते हैं। इसीलिए पारम्परिक चिकित्सा में इसका प्रयोग खांसी, अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी श्वसन समस्याओं से राहत पाने के लिए किया जाता है।

आम की पत्तियों का उपयोग अक्सर विभिन्न त्वचा स्थितियों के इलाज के लिए किया जाता है। आम की पत्तियों को कुचलकर या उसका काढ़ा सीधे प्रभावित जगह पर लगाया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि आम की ताजी पत्तियाँ चबाने से मौखिक स्वच्छता को बढ़ाना मिलता है और दान्त दर्द, मसूडों की बीमारी और सांसों की दुर्गंध जैसी समस्याओं से राहत मिलती है।

पत्तियों में जीवाणुरोधी गुण होते हैं जो मौखिक बैक्टीरिया को मारने और प्लाक गठन को कम करने में मदद कर सकते हैं। आम के पत्तों की सुगन्ध लेने या डिफ्यूजर में आम के पत्तों के आवश्यक तेल का उपयोग (Essential Oil) करने से चिंता कम करने और शांति की भावना पैदा करने में मदद मिल सकती है।

आम की छाल के उपचारात्मक उपयोग : माना जाता है कि आम की छाल में हाइपोग्लाइसेमिक प्रभाव होता है, जो मधुमेह के प्रबन्धन में सहायता करता है। आम की छाल से बने काढ़े या अर्क का सेवन शर्करा की चयापचय (Glucose Metabolism) को विनिमयित करने में मदद कर सकता है। इसमें Tannins हैं। इसीलिए आम की छाल का उपयोग दस्त, पेशिच और पेट की परेशानी जैसी पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए किया जाता है। आम की छाल का उपयोग कभी-कभी आयुर्वेदिक औषधीय योगों में ज्वर को कम करने और सिरदर्द और शरीर दर्द जैसे संबंधित लक्षणों को कम करने के लिए किया जाता है। इसके शीतलन गुण शरीर के तापमान को कम करने और बुखार की स्थिति से राहत दिलाने में मदद कर सकते हैं।

आम की छाल की तैयारी का उपयोग गठिया के दर्द, गठिया और जोडों की कठोरता से राहत के लिए बाहरी रूप से किया जाता है। प्रभावित क्षेत्र पर आम की छाल के पेस्ट से मालिश करने या पुल्टिस लगाने से जोडों और मांसपेशियों में दर्द और सूजन को कम करने में मदद मिल सकती है। आम की छाल के काढ़े का उपयोग कभी-कभी मासिक धर्म चक्र को विनिमयित करने और अनियमित मासिक धर्म, ऐंठन और अत्यधिक रक्तस्राव जैसे मासिक धर्म संबंधी विकारों के लक्षणों को कम करने के लिए किया जाता है। छाल के कसैले गुण गर्भाशय की मांसपेशियों को टोन करने और हर्मोनल संतुलन को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं। कुछ व्यक्तियों को आम की छाल से एलर्जी हो सकती है या प्रतिकूल प्रतिक्रिया का अनुभव हो सकता है, इसलिए Patch test करना चाहिए और कोई भी नकारात्मक लक्षण होने पर उपयोग बन्द करना आवश्यक है।

आम के फल के उपचारात्मक उपयोग : आम विटामिन-सी, विटामिन-ए और बीटा-कैरोटीन सहित विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होते हैं, जो प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने और शरीर को संक्रमण और बीमारियों से बचाने में मदद करते हैं। आम में विटामिन-ए और बीटा-कैरोटीन का उच्च स्तर आंखों के स्वास्थ्य और दृष्टि का समर्थन करता है। आम के नियमित सेवन से उम्र से संबंधित धब्बेदार अधः पतन, मोतियाबिन्द और अन्य नेत्र विकारों को रोकने में मदद मिल सकती है। आम में पोटेशियम, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट होते हैं जो स्वस्थ रक्तचाप, कोलेस्ट्रॉल के स्तर और हृदय समारोह को बनाए रखने में मदद करते हैं। वे सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करके हृदय स्वास्थ्य का भी समर्थन करते हैं। उष्णकटिबंधीय जलवायु में, आम में पानी की मात्रा अधिक होने और ठण्डक देनेवाले गुणों के कारण आम का सेवन हीट स्ट्रोक और निर्जलीकरण से बचने के लिए किया जाता है। आम में क्षारीय गुण होते हैं जो शरीर के pH स्तर को संतुलित करने और अम्लता को कम करने में मदद करते हैं। आहार में आम शामिल करने से एसिड रिफ्लक्स, अपच और सीनें में जलन के लक्षणों को कम करने में मदद मिल सकती है।

आम का अधिक सेवन करने से होनेवाले दुष्प्रभाव : अधिक मात्रा में आम का सेवन, विशेषरूप से उच्च कैलोरी वाले आहार के अलावा, वजन बढ़ाने और मोटापे में योगदान कर सकता है। आम जैसे फाइबरयुक्त खाद्य पदार्थों के अत्यधिक सेवन से सूजन, गैस पेट की परेशानी और दस्त हो सकते हैं, खासकर संवेदनशील पेट या चिडचिडा आंत्र (IBS) व्यक्तियों में। कुछ व्यक्तियों को आम या फलों में पाए जानेवाले कुछ प्रोटीन से एलर्जी हो सकती है। आम के अत्यधिक सेवन से GERD वाले लोगों में सीने में जलन, अपच और असुविधा हो सकती है। बडी मात्रा में पके आम या आम के उत्पादों का सेवन करने से रक्त शर्करा के स्तर में तेजी से बढ़ोत्तरी हो सकती है, खासकर मधुमेह या इंसुलिन प्रतिरोध वाले व्यक्तियों में जिन लोगों को इससे अलर्जी है, वे सम्भलकर रहें। यहाँ पर जानकारी मात्र के लिए दिया गया है। संशय में चिकित्सक की सलाह लें।

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - आचार्य के.रामसूर्यनारायण
अनुवाद - श्री अवधेष कुमार शर्मा

त्रयस्त्रिंशः पाठः - तैंतीसवाँ पाठ

	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
प्र	रामः	रामाः	फलम्	फलानि
द्वि	रामम्	रामान्	फलम्	फलानि
त्रु	रामेण	रामैः	फलेन	फलैः
च	रामाय	रामेभ्यः	फलाय	फलेभ्यः
पं	रामात्	रामेभ्यः	फलात्	फलेभ्यः
ष	रामस्य	रामाणाम्	फलस्य	फलानाम्
स	रामे	रामेषु	फले	फलेषु
सं प्र	हे राम!	रामाः	हे फल!	हे फलानि!

अम्बा शब्दः - स्त्रीलिङ्गः - (स्त्री लिंग) (अम्बा)

	एकवचन	बहुवचन		एकवचन	बहुवचन
प्र	अम्बा	अम्बाः	प	अम्बायाः	अम्बाभ्यः
द्वि	अम्बाम्	अम्बाः	ष	अम्बायाः	अम्बानाम्
त्रु	अम्बया	अम्बाभिः	सं	अम्बायाम्	अम्बासु
च	अम्बायै	अम्बाभ्यः	सं प्र.	हे अम्ब!	हे अम्बाः!

अकारान्त पुल्लिंग शब्द उपर्युक्त राम शब्द की तरह चलते हैं। अकारान्त नपुंसकलिंग के सभी शब्द उपर्युक्त फल शब्दवत् चलेंगे, तथा आकारान्त स्त्री लिंग शब्दवत् चलते हैं। अम्बा शब्द की जैसा साधारण है।

अप्रैल महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - व्यवसाय, उद्योग-धन्धें की स्थिति अनुकूल रहेगी। नौकरी में पदोन्नती होगी। पुराने विपरीत स्थितियों में क्रमशः सुधार होने से कार्यों में सकारात्मक प्रगति होगी। विरोधी पक्ष परास्त होंगे, दैनन्दिन जीवन की नियमितता के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। राजकीय सहयोग, कार्य में सफलता, वाहन सुख, वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा।

वृषभ राशि - व्यापार कार्यों में पारिश्रमिक सफलता, दैनंदिन जीवन की नियमितता के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सामाजिक कार्यों में अभिरुचि होने से सफलता, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा मिलेगी। आर्थिक लाभ, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में अनुकूलता।

मिथुन राशि - शरीर स्वस्थ बना रहेगा, मन में सकारात्मक विचारों का उदय। राजकीय-सम्मान, आर्थिक सहायता प्राप्त होने की सम्भावना। नये लोगों से सम्पर्क होने के कारण उद्योग, व्यापार कार्यों में प्रगति, नौकरी पेशों में पदोन्नति।

कर्कटक राशि - अष्टमस्थ मंगल-शनि के कारण स्वास्थ्य चिन्ता बनी रहेगी, वाहन सतर्क होकर चलाए वरना चोट-दुर्घटना हो सकती है जिससे कष्ट होगी। मन को शान्त रखे निरर्थक भाग दौड़, रुके हुए कार्यों में प्रगति, व्यापार में अनुकूलता, नौकरी सुखद, सामाजिक, धार्मिक कार्यों में अभिरुचि जिससे मान, सम्मान प्राप्ति।

सिंह राशि - अपने वाणी-व्यवहार पर नियन्त्रण रखे नहिं तो कार्य क्षेत्रों में क्षति, वाद-विवाद, अपमान, कार्यविरोध, आर्थिक समस्या, व्यापार कार्यों में उदासीनता। अपने खान-पान और दिनचर्या पर ध्यान रखे शरीर अस्वस्थ, उदर-वायु विकार, शारीरिक कष्ट हो सकता है।

कन्या राशि - स्वास्थ्य सामान्य, मानसिक कष्ट होने के कारण निरर्थक लोगों से मनमुटाव, वाद- विवाद, तनाव, मन खिन्न रहेगा। छात्रों के लिए प्रतियोगी क्षेत्रों में सफलता, अपनों का सहयोग, कौटुम्बिक सुख, आर्थिक लाभ, व्यापार में लाभ। विद्या-बुद्धि का विकास, मित्रों का सहयोग, धन संग्रह, विरोधि परास्त होंगे। माता-पिता की सेवा करें।

तुला राशि - इस माह आपको मिलाजुला प्रभाव दिखेगा, आर्थिक समुन्नति जिसका उचित मूल्यांकन नहीं कर पायेंगे। आरोग्य सुख, रचनात्मक कार्यों के प्रति रुचि, मित्रों का सहयोग, निर्माणकार्यों में अनुकूलता। व्यापार क्षेत्रों से लाभ, वाहन-भूमि लाभ, सामाजिक-धार्मिक कार्यों में रुचि, संलग्नता। यात्रा योग बन रहा है।

वृश्चिक राशि - यह माह आपके लिए प्रसन्नतादायक रहेगा, स्वास्थ्य उत्तम, हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण, शुभविचारों का उदय, पारिवारिक सुख, इष्ट-मित्र-स्त्री-संतान कुटुम्ब में प्रसन्नता, सामाजिक कार्यों में संलग्नता विकास, शक्ति संवर्धन।

धनुष राशि - शरीर स्वस्थ होने के कारण साहस-पराक्रम मनोबल में अभिवृद्धि होगी। सम-सामयिक समस्याओं का समाधान, व्यापारिक उन्नति जिससे आर्थिक विकास, छात्रों के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता।

मकर राशि - यह माह आपके लिए मिलाजुला रहेगा। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा, अपने वाणी को नियन्त्रण रखे कटु न बोले, जिससे आपकी अपमान, वादविवाद होने से मानसिक कष्ट होंगे। रोजी-रोजगार में सफलता, आर्थिक संतुलन, यात्रा कष्ट, अपनों का सहयोग, गृहस्थ जीवन आनन्ददायक रहेगा, परिवार-समाज में यश-सम्मान प्रतिष्ठा।

कुंभ राशि - अनेकानेक लाभ, व्यवसाय में उन्नति, अपने सहयोगी-कुटुम्ब मित्रों का सहयोग जिससे मन उल्लास पूर्ण रहेगा। विशिष्ट कार्यों में प्रगति, आर्थिक विकास, श्रमसाध्य सफलता। नौकरी में पदोन्नति, नूतन कार्य का आरम्भ। गृहलाभ, संतानलाभ, छात्रों के लिए शुभ समय।

मीन राशि - अपने खान-पान और दिनचर्या पर ध्यान रखे शरीर अस्वस्थ, उदर-वायु विकार, शारीरिक कष्ट हो सकता है। आमदनी से अधिक धन व्यय होगा, अपने आर्थिक स्थिति पर ध्यान रखे। वाणी व्यवहार में कोमलता रखे, मधुर वचन बोले नहीं तो कष्ट, परिश्रम करने के उपरान्त भी लाभ सामान्य होगी, आय से अधिक व्यय होगा, यत्र तत्र यात्रा करने के कारण मन खिन्न रहेगा।

नीतिकथा

समर्पण के फल

- श्री के.रामनाथन

कुसुमपुर सुन्दर और छोटा गाँव है। रत्नसेन नामक एक युवक वहाँ बढई का काम करता था। उसे अपने काम में कोई इच्छा या कोई लगन नहीं थी। वह बेमन से अपना काम कर रहा था। इसलिए उसकी कमाई भी बहुत कम मिलती थी। एक दिन उस गाँव में स्वामी तेजानंद आये थे। गाँव के लोग जानते थे कि स्वामीजी बडे तपस्वी हैं और जीवन में उठते संकट को दूर करने के लिए उचित उपाय बताने वाले हैं। गाँव के लोग बडी संख्या में उनके दर्शन में गये थे और अपनी समस्या को सुनाकर उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर लेते थे। युवक रत्नसेन को यह बात मालूम हुई। उसने सोचा कि साधू से मिलने पर उसके मन की वेदना दूर होगी।

यह सोचकर युवक रत्नसेन एक दिन साधु से मिलने गया। उसने साधु के चरणों को छूकर नमस्कार किया। तब साधु ने उसे आशीर्वाद देते हुए पूछा, ''वत्स! तुम्हारी क्या समस्या है?'' रत्नसेन ने बडी विनम्रता से कहा, ''गुरुवर! मुझे अपने काम से कोई संतोष नहीं मिल रहा है। मुझे आवश्यक कमाई भी नहीं मिल रही है।'' यह सुनकर साधु ने पूछा, ''वत्स! तुम क्या काम कर रहे हो?'' युवक ने कहा, ''गुरुवर! मैं बढई का काम कर रहा हूँ। लेकिन मुझे उस काम में कोई संतोष तो नहीं मिल रहा है।'' तब साधु ने पूछा, ''उसके पहले तुमने क्या काम किया?'' युवक ने कहा, ''गुरुवर! मैं उसके पहले कपडे का व्यापार कर रहा था। लेकिन मुझे उसमें भी संतुष्टि नहीं मिली।'' फिर साधु ने पूछा, ''उसके पहले तुम क्या काम कर रहे थे? युवक ने कहा, ''गुरुवर! मैं उसके पहले खेतीबारी का काम कर रहा था। लेकिन मुझे उसमें भी कोई संतोष तो नहीं मिला। इस प्रकार मुझे किसी भी काम में कोई संतोष तो नहीं मिल रहा है। इसलिए आप मुझे कोई मार्गदर्शन दीजिए।''

सब सुनकर साधु ने उसे एक कहानी सुनाई ''वत्स! चन्द्रसेन बडा धनी व्यापारी था। वह अपने व्यापार के वास्ते कहीं दूर गया हुआ था। वह कुछ महीनों के बाद अपने गाँव में वापस आया। उसने देखा के वहाँ एक स्थान पर तीन कारीगर पत्थर तोड रहे थे। चन्द्रसेन उन तीनों कारीगरों में एक के

निकट जाकर पूछा, ''मित्र! तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'' उसका सवाल सुनकर वह आदमी झुंझुला उठा। उसने गुस्सा करते हुए कहा, ''तुम तो देख रहो हो न।'' क्रोध करते उस आदमी से ठीक जवाब न मिलने के कारण वह दूसरे आदमी के निकट गया और पूछा, ''मित्र! यहाँ क्या कर रहे हो?'' उस आदमी ने इतना ही कहा, ''मेरे बाल बच्चे हैं और पत्नी है उन सबका देखबाल करने के लिए यहाँ काम कर रहा हूँ।'' उस दूसरे आदमी से भी ठीक जवाब न मिलने के कारण वह व्यापारी तीसरे आदमी के पास जाकर उसी सवाल को पूछा। तब उस तीसरे आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा ''जी! यहाँ एक धर्मशाला बनने वाली है। उसे बनाने के लिए हम यहाँ पत्थर तोडने का काम कर रहे हैं। यदि यह धर्मशाला बन जाए तो गाँववालों के लिए बडा लाभ मिलेगा। यदि कोई गरीब यात्री आता है तो वह यहाँ मुफ्त आराम कर सकता है। गाँव के लोग अपने घर की शादी या उत्सव को यहाँ आकर मना सकते हैं। इसलिए बनती इस धर्मशाला से गाँव के लोगों को बडा लाभ मिलने वाला है।'' उस तीसरे आदमी के जवाब से धनी खुश हुआ। उसने अपना परिचय देते हुए उससे कहा, ''मैं भी निकट के गाँव में एक धर्मशाला और गरीबों के लिए निवास आदि बनवाना चाहता हूँ। तुम्हारे जवाब से मालूम होता है कि तुम अपने काम में कितना लगन रखते हो। इसलिए कल तुम मुझे अपने घर में मिलो। मैं उस काम की जिम्मेदारी तुमको ही देना चाहता हूँ। क्योंकि उसे सफल पूर्वक करने की योग्यता तुम में है।''

आखिर साधु ने रत्नसेन को देखकर स्पष्ट किया कि पहले आदमी में काम के प्रति कोई इच्छा नहीं है। इसलिए वह हमेशा गुस्से में ही रहता है। दूसरा आदमी तो अपना काम लगन के बिना कर रहा है। उसके मन में अपने परिवार को संभालना विचार ही अधिक है। पर तीसरे आदमी में काम के प्रति संतोष की भावना है। इसलिए वह आत्मसमर्पण भाव से उस काम को कर रहा है। उसके आत्मसमर्पण के लिए भगवान ने उचित फल दिला दिया है।

कहानी को सुनाकर साधु ने रत्नसेन से कहा अब तुमको समझ में आ गया होगा कि अपने समर्पण भाव के कारण उस तीसरे आदमी को कितना बडा लाभ मिला। काम में सफल होने का रहस्य भी वही है। जो आदमी अपने काम को समर्पण भाव से करता है उसको उन्नति जरूर मिलती है। इसलिए यह न देखना कि कोई काम छोटा है कोई काम बडा है। बल्कि जो काम हमें मिला है उसे बडे लगन से और आत्मसमर्पण भाव से करेंगे तो भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होगा। हमारी उन्नति या अवनति हमसे ही होती है।

साधु के उपदेश से रत्नसेन की आँखें खुल गयीं। उसे अपनी गलती मालूम हुआ और वह अपने बढई के काम में अधिक लगन से काम किया। थोडे ही काल में गाँव भर में अच्छा नाम कमा लिया और उसकी कमाई भी बढ गयी।

मई 2024

10 अक्षयतृतीया, श्री परशुराम जयंती
12 श्री रामानुज जयंती
12 श्री शंकराचार्य जयंती
16-24 तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
16-19 तिरुमल श्री पद्मावती श्रीनिवास का परिणयमहोत्सव
21-29 ऋषिकेश, नारायणवनम् श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
20-22 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का वसंतोत्सव
22 श्री नृसिंह जयंती, तरिगोंडा वेंगमांबा जयंती
23 श्री कूर्म जयंती, श्री अन्नमय्या जयंती

चित्रकथा

सभी को मोक्ष

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के द्वारकानाथ

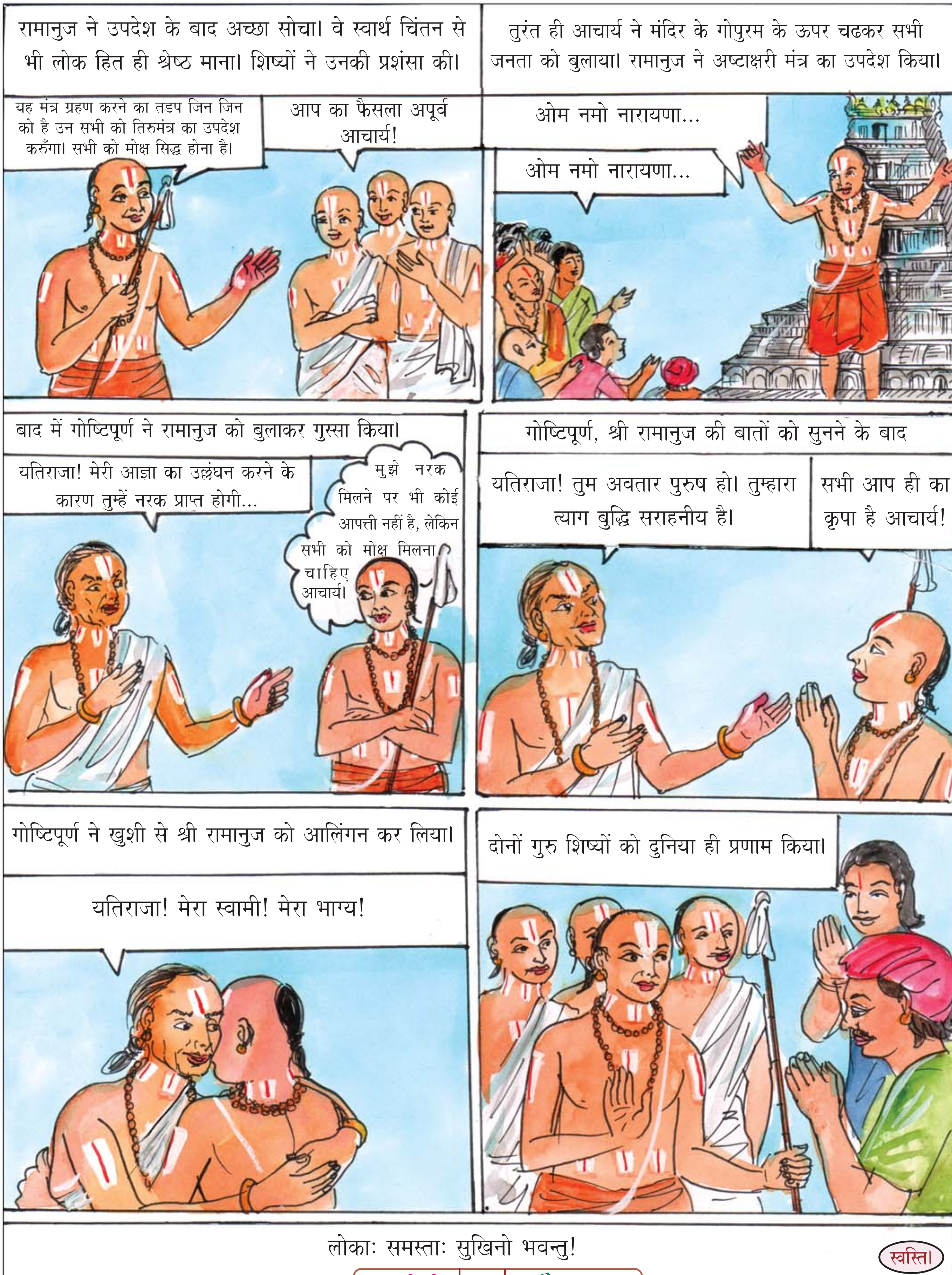

रामानुज ने उपदेश के बाद अच्छा सोचा। वे स्वार्थ चिंतन से भी लोक हित ही श्रेष्ठ माना। शिष्यों ने उनकी प्रशंसा की।
यह मंत्र ग्रहण करने का तडप जिन जिन को है उन सभी को तिरुमंत्र का उपदेश करुँगा। सभी को मोक्ष सिद्ध होना है।
आप का फैसला अपूर्व आचार्य!
तुरंत ही आचार्य ने मंदिर के गोपुरम के ऊपर चढकर सभी जनता को बुलाया। रामानुज ने अष्टाक्षरी मंत्र का उपदेश किया।
ओम नमो नारायणा...
ओम नमो नारायणा...
बाद में गोष्टिपूर्ण ने रामानुज को बुलाकर गुस्सा किया।
यतिराजा! मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने के कारण तुम्हें नरक प्राप्त होगी...
मुझे नरक मिलने पर भी कोई आपत्ती नहीं है, लेकिन सभी को मोक्ष मिलना चाहिए आचार्य।
गोष्टिपूर्ण, श्री रामानुज की बातों को सुनने के बाद
यतिराजा! तुम अवतार पुरुष हो। तुम्हारा त्याग बुद्धि सराहनीय है।
सभी आप ही का कृपा है आचार्य!
गोष्टिपूर्ण ने खुशी से श्री रामानुज को आलिंगन कर लिया।
यतिराजा! मेरा स्वामी! मेरा भाग्य!
दोनों गुरु शिष्यों को दुनिया ही प्रणाम किया।
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु!
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु..........., **चंदा नंबर**.......................
पता..
....
मोबाइल नं....

क्विज-21

1) अन्नमय्या ने किस भगवान केलिए कीर्तन लिखा?
ज)..
2) अयोध्या में विराजित भगवान का नाम क्या है?
ज)..
3) तिरुऊरहम (कांचीपुरम) मंदिर के तीर्थ का नाम क्या है?
ज)..
4) तिरुऊरहम मंदिर का विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
5) तिरुनीरहम मंदिर के माताजी का नाम क्या है?
ज)..
6) चैत्र मास शुद्ध पाड्यमी पर्व को तेलुगु में क्या कहते है?
ज)..
7) उत्तरा के गर्भ को किसने रक्षा किया?
ज)..
8) श्रीराम के पत्नी का नाम क्या है?
ज)..
9) गौतम मुनी का पत्नी का नाम क्या है?
ज)..
10) हनुमान का आराध्य दैव कौन है?
ज)..
11) चैत्र मास शुक्ल तृतीया तिथि का क्या विशेषता है?
ज)..
12) श्रीराम के पिताजी का नाम क्या है?
ज)..
13) तुलसीदास रचित महान ग्रंथ का नाम क्या है?
ज)..
14) श्रीराम ने कितने वर्ष वनवास किया था?
ज)..
15) तिरुपति के नजदीक में स्थित नागुलापुरम में विराजित भगवानजी का नाम क्या है?
ज)..

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) श्रीराम	अ) श्रीरंगम्
2) बालाजी	आ) कांचीपुरम्
3) कामाक्षी देवी	इ) तिरुपति
4) रंगनाथस्वामी	ई) जम्मू और कश्मीर
5) वैष्णो देवी	उ) अयोध्या

1) उ 2) इ 3) आ 4) अ 5) ई

श्रीराम स्तोत्र

आपदामपहर्तारं दातारं
सर्वसंपदाम।
लोकाभिरामं श्रीरामं
भूयो भूयो नमाम्यहम्।।

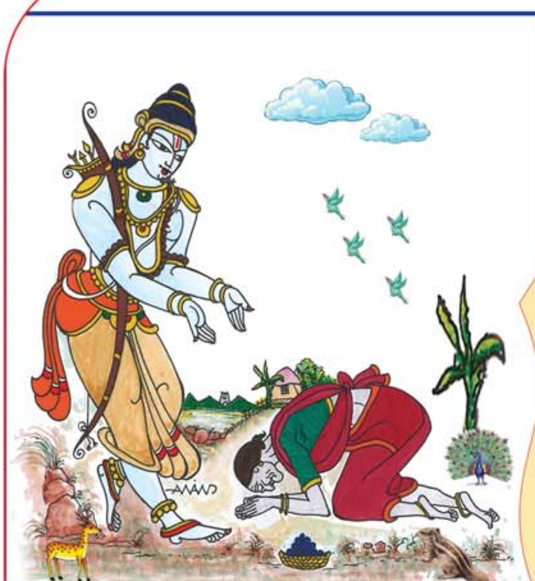

चित्र में अंतर खोजे!

१) बादल
२) तोता
३) केले का पेड़
४) मोर
५) हिरन
६) गिलहरी
७) पहाड

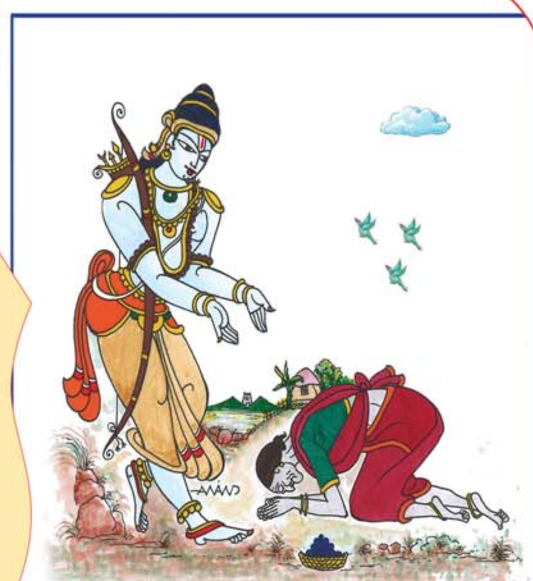

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

....

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877
दूरभाष :
2264359, 2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 21-04-2024 से दि. 23-04-2024 तक तिरुमल श्री बालाजी का वसंतोत्सव।

दि. 04-04-2024 को श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याणवेंकटेश्वर स्वामीजी का पुष्पयाग महोत्सव।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-03-2024 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026"
Posting on 5th of every month.